मुक्तिदाता येशु का शुभ संदेश
लेखक शिष्य योहन

पुस्तक की कुछ ज़रूरी बातें

यह मुक्तिदाता येशु के जीवन की चार सत्य कहानियों में से एक है, जो प्राचीन परंपरा के अनुसार प्रभुजी के तीन सबसे प्रिय शिष्यों में से एक योहन द्वारा लिखी गई थी।

योहन ने मुक्तिदाता येशु के अनेक गुणों में से उनके परमात्मा-पुत्र के रूप को अपने लेखन में दिखाया है। परमात्मा ने चुना कि प्रभु येशु का जन्म इज़राएल देश में हो, लेकिन वास्तव में वह भारत सहित पूरी दुनिया के दिव्य गुरु और प्रभु हैं!

योहन ने इस पुस्तक में गुरु येशु की कई न भुलाई जाने वाली सत्य कहानियों को लिखा हैं, जिसमें वह समय भी शामिल है जब

- गुरु येशु ने एक शादी में चमत्कार दिखा कर अपनी माता के कहने का आदर किया
- गुरु येशु एक धर्मगुरु को आत्मिक जन्म का वास्तविक अर्थ समझाकर अपने अद्‌भुत ज्ञान का प्रदर्शन करते हैं
- गुरु येशु ने यहूदी समाज द्वारा ठुकराई गई स्त्री को न सिर्फ सम्मान दिलाया बल्कि इस स्त्री के माध्यम से उसके पूरे समाज को अपने दर्शन कराए
- गुरु येशु चमत्कारिक रूप से 5,000 भक्तों को भोजन कराया
- गुरु येशु ने एक अंधे पैदा हुए व्यक्ति की आंखें ठीक कर दी
- गुरु येशु अपने शिष्यों के पैर धोए
- गुरु येशु ने अपने एक मरे हुए दोस्त को ज़िन्दा कर दिया।

गुरु येशु की क्रूस पर दर्दनाक मृत्यु के बाद, पिता परमात्मा ने उन्हें ज़िन्दा कर दिया और उनके भक्तों ने उन्हें ज़िन्दा देखा और उनसे मुलाकात की।

जब गुरु येशु ने इस दुनिया को छोड़ कर परमस्वर्ग जाने की तैयारी की, उन्होंने वादा किया कि वह अपने सभी भक्तों को अपनी पवित्र आत्मा देंगे जिसकी सहायता से वे परमात्मा के मार्ग पर चल सकेंगे और मोक्ष प्राप्त करेंगे।

जब आप इस पुस्तक को पढ़ते हैं, तो खुश हों कि आपको भी परमात्मा और मोक्ष का ज्ञान प्राप्त हो सकता है और आपको मुक्तिदाता येशु पर अपनी आस्था प्रकट करने, उनकी पवित्र आत्मा प्राप्त करने और अपने जीवन से हमेशा परमात्मा को प्रसन्न करने का अवसर मिल सकता है।

प्रार्थना - "हे परमात्मा, अपने शिष्य योहन को मुक्तिदाता येशु हमारे प्रभु और गुरु के बारे में लिखने के लिए प्रेरणा देने के लिए आपका धन्यवाद। यह आपकी कृपा है कि प्रभु येशु में आस्था रखने से हमें मोक्ष प्राप्त होगा।"

• • • ▪ • • •

1

परमात्मा ने दिव्य संदेश द्वारा मोक्ष और प्रकाश दिया

[1]आरंभ में संदेश था* और संदेश परमात्मा के साथ था और संदेश
परमात्मा था। [2]यही संदेश आरंभ से परमात्मा के साथ था। [3-4]संदेश
के द्वारा सब कुछ बना और इस संदेश के बिना कुछ भी नहीं बना।
संदेश से मोक्ष* आया और यह मोक्ष सारी मानव जाति को प्रकाश में
ले आया। [5]और यह प्रकाश अँधेरे में चमक रहा है, परंतु अँधेरे से भरा
संसार उसे समझ नहीं पाया।*

[6]परमात्मा ने एक मनुष्य को भेजा जिसका नाम योहन* था। [7]योहन
इस प्रकाश के बारे में दूसरों को बताने आए थे ताकि उनकी बात
सुनकर सब लोग प्रकाश पर विश्वास करें। [8]योहन स्वयं प्रकाश नहीं

---

* **1:1** *आरंभ में संदेश था* - या, "आरंभ में शब्द था" * **1:3-4** *मोक्ष* - या, "ज़िन्दगी" और "परमात्मा के साथ हमेशा की ज़िन्दगी" * **1:5** *परंतु अँधेरे से भरा संसार उसे समझ नहीं पाया* - या, "और अंधकार की शक्तियाँ उसे बुझा न सकीं।" * **1:6** *योहन* - या, "समर्पण-स्नान दाता योहन"

थे, किंतु प्रकाश के बारे में बताने आए थे। [9]यह सच्चा प्रकाश, जो हर
एक व्यक्ति को उजाले से भर देता है, संसार में आने वाला था।
[10]संदेश* संसार में थे और संसार उन्हीं के द्वारा बनाया गया, किंतु संसार के
लोगों ने उनको नहीं पहचाना। [11]वह अपनी जगह में आए, परंतु उनके अपनों ने
ही उनको नहीं अपनाया। [12-13]लेकिन कुछ लोगों ने उन्हें अपना सब कुछ मान
लिया और उन पर अपनी आस्था प्रकट की है। वह इन सभी लोगों को इस
संसार में रहते हुए एक नया आत्मिक जन्म प्राप्त करने की शक्ति प्रदान करता
है। यह आत्मिक जन्म हमारे शारिरिक जन्म से अलग है और किसी भी
सांसारिक या मानवीय योजना का परिणाम नहीं है। इसके बजाय, परमात्मा
हमें यह आत्मिक जन्म देते हैं और हमें अपने बेटे और बेटियाँ बना लेते हैं।
[14]तो संदेश ने शरीर धारण कर हमारे बीच निवास किया। हमने
उनका ऐसा तेज दखा, जैसा पिता परमात्मा के एकलौते पुत्र* का तेज।
यह पुत्र कृपा और सत्य का सागर है।
[15]योहन ने उनके बारे में ऊँची आवाज़ में कहा, "यह वही है जिनके
बारे में मैंने बताया था कि वह आएँगे! वह मुझ से महान हैं, क्योंकि
जब मेरा जन्म भी नहीं हुआ था वह मौजूद थे।"
[16]हम सबने उनके दया के सागर से एक के बाद एक कृपा प्राप्त की।
[17]जैसे कि परमात्मा ने हमारे पूर्वजों को अपने प्रवक्ता मोशे के द्वारा नियम
और शिक्षा दिए, उसी प्रकार मुक्तिदाता येशु द्वारा कृपा और सत्य आए।
[18]परमात्मा को किसी ने कभी नहीं देखा है, परंतु एकलौता दिव्य पुत्र+ ने जो
पिता परमात्मा के कलेजे का टुकड़ा है, उन्होंने परमात्मा को प्रकट किया है।

योहन मुक्तिदाता येशु को अपने से कहीं महान मानते हैं

[19]जब यरूशलम शहर से यहूदी धर्मगुरुओं ने पुरोहित और लेवी-वंश
के मंदिर-सेवादार भेजे कि वे समर्पण-स्नान दाता योहन से पूछें, "आप
वास्तव में कौन हैं?" [20]तब योहन ने सब लोगों से साफ-साफ कहा, "मैं
मुक्तिदाता नहीं हूँ जैसा की तुम समझते हो।"
[21]उन लोगों ने योहन से पूछा, "तो फिर आप कौन हैं? क्या आप
परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह हैं?"

---

* **1:10** *संदेश* - या, "संदेश-प्रकाश" * **1:14** *एकलौते पुत्र* - या, "अद्वितीय पुत्र"

योहन ने कहा, “नहीं।”
“तो क्या आप मोशे की तरह परमात्मा के प्रवक्ता हैं जिनका हम
इंतज़ार कर रहे थे?”*
उन्होंने उत्तर दिया “नहीं।”
22“तो फिर आप कौन हैं? हमें बताइए कि हम अपने भेजने वालों को
उत्तर दे सकें कि आप अपने बारे में क्या कहते हैं।”
23योहन ने परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह के शब्दों में जवाब दिया,
“मैं सुनसान बंजर जगह में वह आवाज़ हूँ
जो पुकार-पुकार कर कह रहा है,
‘प्रभु के आने के लिए रास्ते को तैयार करो
और हर बाधा को दूर करो।’”
24फरीसी धार्मिक पंथ के कुछ लोग भी वहाँ भेजे गए थे। 25उन्होंने
पूछा, “यदि आप मुक्तिदाता नहीं हैं, परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह
नहीं हैं और न वह परमात्मा के प्रवक्ता हैं जो आने वाले थे, तो फिर
आप समर्पण-स्नान क्यों देते हैं?”
26योहन ने उत्तर दिया, “मैं केवल पानी से समर्पण-स्नान देता हूँ। परंतु
तुम्हारे बीच एक व्यक्ति आया है जिसे तुम नहीं पहचानते कि वह
कौन हैं। 27जो मेरे बाद आने वाले थे, वह आ गए हैं, और मैं तो उनके
जूतों के फीते भी खोलने लायक भी नहीं हूँ।” 28यह बातचीत यरदन
नदी के पार बैथनिया गाँव+ में हुई, जहाँ योहन समर्पण-स्नान दे रहे थे।

मुक्तिदाता येशु पापों का दाग धोकर सबको पवित्र करते हैं

29दूसरे दिन योहन ने जब प्रभु येशु को अपनी ओर आते देखा तो वे
बोले, “देखो, यह परमात्मा का विशेष मेमना* है जो संसार के लोगों
को उनके पापों से शुद्ध करता है! 30यह वही हैं जिनके बारे में मैंने कहा

---

* **1:21** *जिनका हम इंतज़ार कर रहे थे* - परमात्मा-ग्रंथ में कई वर्षों पहले भविष्यवाणी की गई थी कि महान परमात्मा-प्रवक्ता मोशे जैसा कोई व्यक्ति भविष्य में आएगा और यहूदी लोगों का मार्गदर्शन करेगा। **1:23** यशायाह 40:3 * **1:29** *परमात्मा का विशेष मेमना* - (या, “विशेष भेड़ बच्चा”) यरूशलम मंदिर में लोग मुक्ति-त्यौहार के अवसर पर पुरोहित के द्वारा निष्कलंक मेमना बलि किया करते थे। गुरु येशु ने एक निष्पाप सिद्ध जीवन बिताया जिसके कारण वह न केवल यरूशलम शहर के लोगों के लिए बल्कि सब मानवजाति के लिए एक विशेष बलि सिद्ध हुए और उन्होंने संसार के पापों को हर लिया।

था, 'मेरे बाद एक व्यक्ति आ रहे हैं जो मुझसे महान हैं, क्योंकि जब
मेरा जन्म भी नहीं हुआ था वह मौजूद थे।' [31]पहले मैंने भी उन्हें नहीं
पहचाना था, परंतु अब पहचानता हूँ। मैं पानी द्वारा समर्पण-स्नान देता हूँ
ताकि इज़राएल के लोग उन्हें पहचान सकें।"
[32]योहन ने उनसे आगे कहा, "मैंने परमात्मा की पवित्र आत्मा
को परमस्वर्ग से कबूतर के जैसे उतरते देखा और पवित्र आत्मा
उन पर ठहर गई। [33]मैं उनको नहीं पहचानता था, परंतु जिन्होंने मुझे
समर्पण-स्नान देने भेजा था, उन्होंने मुझे बताया, 'जिन पर तुम परमात्मा
की पवित्र आत्मा उतरते और ठहरते देखो, वह वही हैं जो तुमको
पवित्र आत्मा से स्नान देंगे।' [34]मैंने स्वयं ऐसा होते हुए देखा है और मैं
इसका गवाह हूँ कि यही परमात्मा के चुने हुए पुत्र+ हैं।"

परमात्मा द्वारा नियुक्त मुक्तिदाता और शासक

[35]अगले दिन फिर योहन अपने दो शिष्यों के साथ वहाँ थे। [36]योहन
ने प्रभु येशु को पास से जाते हुए देखकर कहा, "देखो, परमात्मा का
विशेष मेमना!" [37]उन दोनों शिष्यों ने योहन को यह कहते सुना तो वे
प्रभु येशु के पीछे हो लिए। [38]जब प्रभु येशु मुड़े और उनको अपने पीछे
आते देखा, तब उनसे पूछा, "तुम क्या चाहते हो?"
उन्होंने कहा, "गुरुजी,* आप कहाँ रहते हैं?"
[39]गुरु येशु ने उत्तर दिया, "आओ और देखो।" तब उन्होंने जाकर गुरु
येशु का निवास स्थान देखा और उस दिन वे दोनों उनके साथ रहे। उस
समय शाम के लगभग चार बजे थे।
[40]शिमोन पतरस का भाई अंदरियास भी उन लोगों में से एक था,
जिन्होंने योहन की बातें सुनीं और फिर गुरु येशु के पीछे चलने लगे।
[41]तब सबसे पहले अंदरियास ने अपने भाई शिमोन को खोजकर
उसे बताया, "हमें वह व्यक्ति मिल गए हैं जिन्हें परमात्मा ने हमारा
मुक्तिदाता और शासक बनने के लिए नियुक्त किया है!"*

---

* **1:38** *गुरुजी* - या, "रब्बी, अर्थात् गुरुजी।" * **1:41** *हमें वह व्यक्ति मिल गए हैं जिन्हें परमात्मा ने हमारा मुक्तिदाता और शासक बनने के लिए नियुक्त किया है* - या, "हमें मुक्तिदाता, परमात्मा के अभिषिक्त, मिल गए हैं।" परमात्मा के अभिषिक्त वह व्यक्ति है जिसे परमात्मा ने मसीहा और इज़राएल का राजा नियुक्त किया है।

42फिर अंदरियास शिमोन को गुरु येशु के पास लाया। गुरु येशु ने
शिमोन को देख कर कहा, “तुम योना के पुत्र+ शिमोन हो। अब से तुम
चट्टान-पतरस* कहलाओगे।”
43दूसरे दिन गुरु येशु ने गलील प्रदेश जाने का निश्चय किया। वहाँ
वह फिलिपस से मिले और उन्होंने उससे कहा, “मेरे शिष्य बनो
और मेरे पीछे चलो।” 44फिलिपस बैथसैदा नगर का निवासी था जहाँ
अंदरियास और पतरस भी रहते थे। 45फिलिपस नतनएल को ढूँढ़ने
गया और उससे कहा, “हमें वह व्यक्ति मिल गए हैं जिनके बारे में
मोशे और परमात्मा के प्रवक्ताओं ने लिखा था! उनका नाम येशु है, जो
नासरत नगर के निवासी योसफ के बेटे हैं।”
46नतनएल ने उत्तर दिया, “क्या नासरत नगर से कुछ अच्छा मिल
सकता है?”
फिलिपस ने उत्तर दिया, “आओ, और स्वयं देख लो।”
47जब गुरु येशु ने नतनएल को आते देखा, तो उन्होंने नतनएल के बारे
में कहा, “यह एक सच्चे इज़राएल देश का पुत्र है। इस व्यक्ति में कोई
छल-कपट नहीं है।”
48नतनएल ने हैरान होकर पूछा, “आप मुझे कैसे जानते हैं?”
गुरु येशु ने कहा, “मैंने तुम्हें फिलिपस के बुलाने से कुछ समय पहले
दर्शन में देखा था जब तुम अंजीर के पेड़ के नीचे* बैठे थे।”
49नतनएल बोल उठा, “गुरुजी! आप वास्तव में परमात्मा-पुत्र हैं!
आप इज़राएल के राजा हैं!”
50प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “क्या तुम मुझ पर आस्था सिर्फ़ इसलिए
रखना चाहते हो कि मैंने तुमसे कहा कि मैंने तुम्हें देखा था जब तुम
अंजीर के पेड़ के नीचे ही थे? तुम इससे भी अधिक बड़े-बड़े काम होते
देखोगे।” 51प्रभु येशु ने यह भी कहा, “मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता
हूँ, तुम सब परमस्वर्ग को खुला हुआ और परमात्मा के स्वर्गदूतों

---

* **1:42** *चट्टान-पतरस* - या, “केफस, अर्थात् पतरस।” केफस का अर्थ “चट्टान” है। * **1:48** *अंजीर के पेड़ के नीचे* - इस घटना के लगभग 500 साल पहले, परमात्मा के प्रवक्ता जकरयाह ने अंजीर के पेड़ के नीचे बैठकर यह भविष्यवाणी लिखी कि जब परमात्मा अपने सेवक को भेजेंगे तो वह एक दिन उस देश के अधर्म को दूर करेगा (जकरयाह 3:8-10)। शायद नतनएल इस भविष्यवाणी को जानता था।

को तेजस्वी मानव-पुत्र पर से ऊपर जाते और उन पर से उतरते हुए
देखोगे।”*

2

शादी समारोह में चमत्कार

1दो दिन बाद गलील प्रदेश के काना नगर में शादी थी। गुरु येशु की
माँ वहाँ थीं 2और गुरु येशु और उनके शिष्य भी शादी में निमंत्रित थे।
3अंगूर-रस खत्म होने पर गुरु येशु की माँ ने उनसे कहा, “उनके पास
अंगूर-रस नहीं है।”

4गुरु येशु ने उत्तर दिया, “हे महिला, तुम मुझे यह क्यों बता रही हैं?
मेरा समय अभी नहीं आया है।”

5उनकी माँ सेवकों से बोलीं, “जो कुछ वह तुमसे कहे, वही करना।”

6वहाँ यहूदी शुद्धिकरण रीति में इस्तेमाल लाने के लिए छः घड़े रखे
थे। हर एक घड़े में लगभग 100 लीटर पानी रखा जा सकता था।
7प्रभु येशु ने सेवकों से कहा, “घड़ों में पानी भर दो।” सेवकों ने घड़ों
को मुँह तक पानी से भर दिया। 8तब गुरु येशु बोले, “अब कुछ पानी
निकालकर मुख्य हलवाई के पास ले जाओ।” सेवकों ने वैसा ही
किया। 9जब हलवाई ने वह पानी चखा तो वह पानी अंगूर-रस बन
गया था। पर वह नहीं जानता था कि यह रस कहाँ से आया है किंतु
सेवक जिन्होंने पानी निकाला था, जानते थे। तब मुख्य हलवाई ने दूल्हे
को बुलाया 10और उससे कहा, “सब लोग अपने मेहमानों को शुरुआत
में सबसे अच्छा रस परोसते हैं और सबके अच्छी तरह रस पी लेने के
बाद साधारण रस देते हैं। पर तुमने तो अच्छा रस अब तक बचा रखा
है!”

---

* **1:51** *तेजस्वी मानव-पुत्र पर से ऊपर जाते और उन पर से उतरते हुए देखोगे* - प्रभु येशु की यह बात कुलपिता अब्राहम के पोते याकोब के सपने के बारे में है। सपने में याकोब ने देखा कि एक सीढ़ी पृथ्वी से परमस्वर्ग तक जा रही है जिस पर स्वर्गदूत ऊपर नीचे आ-जा रहे हैं। फिर परमात्मा ने याकोब से बात की कि उसके द्वारा उसका परिवार और संसार के सब परिवार आशीष पाएँगे (उत्पत्ति 28:10-15 देखें)। नतनएल और जो लोग वहाँ पर थे उनसे प्रभु येशु व्याख्या कर रहे हैं कि तेजस्वी मानव-पुत्र स्वयं वह “सीढ़ी” हैं जो पृथ्वी से परमस्वर्ग तक जा रही है। बाद के अध्यायों में प्रभु येशु यह बताएँगे कि जब वह उठाए जाएँगे (क्रूस पर चढ़ाए जाएँगे) वह बहुत-से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करेंगे (12:32-33)। परमात्मा तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग वही हैं (14:6)।

[11]इस प्रकार, गलील प्रदेश के काना नगर में, प्रभु येशु ने चमत्कार
करना शुरू कर दिए जिससे उनका तेज प्रकट हुआ। और यह देख कर
उनके शिष्य ने उनपर आस्था रखी और उनकी शरण में आ गए।
[12]इसके बाद गुरु येशु, उनकी माता और उनके भाई और शिष्य
कफरनहूम शहर गए और उन्होंने वहाँ कुछ दिन निवास किया।

तीन दिन में मंदिर का निर्माण

[13]यहूदियों का मुक्ति-त्यौहार नज़दीक आने पर गुरु येशु यरूशलम
शहर को गए। [14]वहाँ उन्होंने परमात्मा के मंदिर के आँगन में बलि
के लिए बैल, भेड़ और कबूतर बेचने वालों तथा मुद्रा व्यापारियों को
बैठे देखा। [15]तब गुरु येशु ने रस्सियों का कोड़ा बनाया+ और भेड़ों
और बैलों सहित सबको मंदिर से खदेड़ दिया। प्रभु येशु ने व्यापारियों
की मुद्राएँ बिखेर दीं और उनकी गद्दियाँ उलट दीं। [16]वह कबूतर बेचने
वालों से बोले, “इन्हें यहाँ से ले जाओ। मेरे पिता परमात्मा के मंदिर
को व्यापार की मंडी मत बनाओ।”
[17]फिर शिष्यों को याद आया कि परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है, “मेरे
लिए आपका मंदिर बहुत महत्वपूर्ण है। इसके आदर-सम्मान के लिए
मैं कुछ भी कर सकता हूँ।”
[18]वहाँ खड़े कुछ यहूदी धर्मगुरु बोले, “आप हमें ऐसा कौन-सा
चमत्कार दिखाएँगे जिससे साबित हो जाए कि आप को ये सब काम
करने का अधिकार है?”
[19]प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “इस मंदिर को गिरा दो और मैं इसे तीन
दिन में फिर खड़ा कर दूँगा।”
[20]धर्मगुरु बोले, “इस मंदिर के निर्माण में छियालीस साल लगे हैं। क्या
आप इसको तोड़कर तीन दिन में फिर खड़ा कर देंगे?” [21]परंतु गुरु येशु
अपने शरीर-रूपी मंदिर के बारे में कह रहे थे। [22]तो जब परमात्मा ने गुरु
येशु की मौत के बाद उन्हें ज़िन्दा कर दिया तब उनके शिष्यों को याद
आया कि गुरु येशु ने ऐसा कहा था। तब शिष्यों ने परमात्मा-ग्रंथ में लिखी
बातों पर और उन शब्दों पर जो गुरु येशु ने कहे थे, विश्वास किया।

2:17 भजन शास्त्र 69:9

अंतरयामी प्रभु येशु

23यरूशलम शहर में मुक्ति-त्यौहार के समय बहुत से लोगों ने प्रभु येशु
पर आस्था प्रकट की क्योंकि उन्होंने प्रभु येशु को चमत्कार करते देखा
था। 24परंतु गुरु येशु ने उन की आस्था प्रकट करने पर भरोसा नहीं
किया, क्योंकि वह लोगों के मन के भेदों को जानते थे। 25किसी को
उन्हें यह बताने की ज़रूरत नहीं थी कि इंसान के मन में क्या चल रहा
है।

3

नए जन्म का रहस्य

1निकोदेमस नामक एक व्यक्ति जो फरीसी धार्मिक पंथ और यहूदी
धर्म-महासभा का सदस्य था। 2एक दिन वह रात के समय गुरु येशु के
पास आया और उनसे बोला, “गुरुजी, हम जानते हैं कि आप परमात्मा
की ओर से गुरु बन कर आए हैं, क्योंकि यदि परमात्मा साथ न हो तो
जो चमत्कार आप करते हैं, उन्हें कोई नहीं कर सकता।”
3गुरु येशु ने जवाब दिया, “मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ कि
जब तक कोई इस जीवन में दूसरा जन्म नहीं ले लेता, तब तक वह
परमात्मा के साम्राज्य को पहचान ही नहीं सकता।”
4निकोदेमस ने पूछा, “कोई जीवन जीते हुए कैसे दुबारा जन्म ले
सकता है? क्या वह फिर अपनी माता के गर्भ में जाकर जन्म ले सकता
है?”
5गुरु येशु ने उत्तर दिया, “मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, यह
जन्म माँ के गर्भ से नहीं होता है। यह समर्पण-स्नान के जल से और
परमात्मा की पवित्र आत्मा के प्रकाश से* होता है। तभी तुम परमात्मा
के साम्राज्य में स्थान पा सकते हो।” 6शारीरिक रूप से बच्चों का जन्म
उनके माता-पिता से होता है। परंतु आत्मिक रूप से परमात्मा की
पवित्र आत्मा ही तुमको परमात्मा की संतान बना सकती है। 7जब मैं
कहता हूँ कि तुम लोगों को इसी तरह से परमात्मा द्वारा जन्म लेने की

---

* **3:5** *समर्पण-स्नान के जल से और परमात्मा की पवित्र आत्मा के प्रकाश से* - या, “जल और आत्मा से”

ज़रूरत है तो हैरान मत हो। [8]हवा जिस दिशा में चाहे चलती है। तुम
उसकी आवाज़ सुनते हो, लेकिन तुम नहीं जानते कि वह कहाँ से आ
रही है और कहाँ जा रही है। जैसे हवा को आसानी से नहीं समझा जा
सकता, वैसे ही जिन लोगों ने इस जीवन में दूसरा जन्म नहीं लिया है,
वे वास्तव में परमात्मा की पवित्र आत्मा से जन्मे लोगों को नहीं समझ
सकते।
[9]निकोदेमस ने कहा, "इन सब बातों का क्या मतलब है?"
[10]गुरु येशु ने उत्तर दिया, "तुम इज़राएल के लोगों के धर्मगुरु हो, फिर
भी तुम इन बातों को नहीं समझते? [11]मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ।
हमने उन बातों को बताया जो हम जानते हैं और जो हमने देखी हैं, पर
तुम लोग हमारी बातों पर विश्वास नहीं करते। [12]जब मैंने तुम लोगों को
पृथ्वी के बारे में बातें बताईं और तुम उन पर विश्वास नहीं कर रहे हो,
तो फिर यदि तुम लोगों को मैं परमस्वर्ग के बारे में बताऊँगा तो कैसे
विश्वास करोगे?
[13]"कोई परमस्वर्ग नहीं गया है, केवल तेजस्वी मानव-पुत्र ही, जो
परमस्वर्ग से उतरा है।
[14]"जैसे परमात्मा के प्रवक्ता मोशे ने सुनसान बंजर जगह में काँस्य
का साँप* खंभे पर ऊँचा उठाया था, उसी प्रकार तेजस्वी मानव-पुत्र को
ऊँचा उठाया जाना ज़रूरी है [15]ताकि जो कोई उन पर आस्था रखेगा
मोक्ष पाएगा।*
[16]"तो परमात्मा ने संसार के लोगों से ऐसा प्रेम किया कि अपने
एकलौते पुत्र* की बलि दे दी ताकि जो कोई पुत्र पर आस्था रखता
है उसका विनाश नहीं होगा, परंतु वह मोक्ष प्राप्त करेगा। [17]परमात्मा ने
अपने पुत्र को इस संसार में इसलिए नहीं भेजा कि पुत्र लोगों को सज़ा
दे, परंतु इसलिए भेजा कि वह उनको पाप के कारण मिलने वाली सज़ा

---

* **3:14** *काँस्य का साँप* - प्रभु येशु के जन्म से लगभग 1500 वर्ष पहले, लोगों ने परमात्मा और परमात्मा के प्रवक्ता मोशे के विरुद्ध पाप किया था। फिर भी मोशे ने परमात्मा से विनती की कि जो साँप परमात्मा ने उनके पाप के परिणाम स्वरूप भेजे हैं, उनसे लोगों की जान बचाएँ। परमात्मा ने मोशे से कहा कि वह एक काँस्य का साँप बनाए और ऊँचे पर लटका दे ताकि जो उसे देखे वह बच जाए (जनगणना 21:8,9)। * **3:15** *पाएगा* - संभवतः प्रभु येशु की बातें यहाँ पर समाप्त होती हैं।
* **3:16** *अपने एकलौते पुत्र* - या, "अपने अद्वितीय पुत्र"

से मुक्ति दें। [18]जो कोई परमात्मा पुत्र पर आस्था रखता है, वह दंड
का भागी नहीं होगा। परंतु जो कोई आस्था नहीं रखता है उस पर दंड
की घोषणा हो चुकी है, क्योंकि उसने परमात्मा के एकलौते पुत्र पर
आस्था नहीं रखी।

अंधकार को छोड़ दो प्रकाश में चलो

[19]"दोषी होने का कारण यह है कि परमात्मा का प्रकाश संसार में
आया, पर लोगों ने प्रकाश के मुकाबले पाप के अंधकार से अधिक
प्रेम किया, क्योंकि उनके काम बुरे थे। [20]हर एक व्यक्ति जो गलत
काम करता है प्रकाश से नफरत करता है। वह प्रकाश के नज़दीक
इसलिए नहीं आता कि कहीं उसके गलत काम प्रकट न हो जाएँ।
[21]परंतु सच्चाई पर चलने वाला व्यक्ति प्रकाश के नज़दीक आता है,
जिससे दूसरे लोग देख सकें कि वह परमात्मा की इच्छा के अनुसार
जीवन बिता रहा है।"

प्रभु येशु का स्थान सबसे ऊंचा

[22]इसके बाद गुरु येशु अपने शिष्यों के साथ यरूशलम शहर छोड़कर
यहूदिया प्रदेश में आ गए और वहाँ शिष्यों के साथ कुछ समय रहकर
लोगों को समर्पण-स्नान दिया। [23]योहन भी शालीम नगर के पास एनोन
गाँव में समर्पण-स्नान दे रहे थे, क्योंकि उस जगह पानी अधिक था।
लोग वहाँ आकर योहन से समर्पण-स्नान लेते थे।
[24]योहन अभी तक जेल में नहीं डाले गए थे। [25]योहन के शिष्यों और
कुछ यहूदी लोगों+ के बीच पवित्र स्नान को लेकर बहस हो गई।
[26]उन्होंने योहन के पास जाकर कहा, "गुरुजी, देखिए, जब आप यरदन
नदी की पूर्व दिशा में उस व्यक्ति के साथ थे, तब आप ने उसकी चर्चा
हमसे की थी। वह लोगों को समर्पण-स्नान दे रहे हैं और सब लोग
उनके पास जाने लगे हैं।"
[27]योहन ने उत्तर दिया, "व्यक्ति को वही करना चाहिए जो परमात्मा*
उसे करने को देते हैं। [28]तुम स्वयं गवाह हो कि मैंने कहा था, 'मैं

---

* **3:27** *परमात्मा* - या, "परमस्वर्ग से" है, लेकिन इस संदर्भ का मतलब है "परमात्मा से।"

मुक्तिदाता नहीं, किंतु उनसे पहले भेजा गया हूँ कि उनके बारे में लोगों
को बताऊँ।'
29"दुल्हन दूल्हे की होती है। दूल्हे के दोस्त उसकी आवाज़ सुनने का
इंतज़ार करते हैं। जब वे उसकी आवाज़ सुनते हैं तो बहुत खुश होते
हैं, क्योंकि अब वे दूल्हे के साथ दुल्हन लेने जा सकते हैं। इसलिए
अब यह मेरी खुशी पूरी हो गई है कि दूल्हा आ गया है। 30ज़रूरी है कि
उनका महत्व बढ़ता जाए और मेरा घटता जाए!"
31प्रभु येशु वह है जो परमस्वर्ग से आएँ हैं, और वह बाकी सभी
से ऊँचा स्थान रखते हैं। पृथ्वी का एक मनुष्य पृथ्वी का ही है और
केवल वही कह सकता है जो उसने पृथ्वी पर देखा और सुना है। परंतु
प्रभु येशु, परमात्मा की ओर से हैं, और वह सबसे महान हैं।+ 32जो कुछ
प्रभु येशु ने परमस्वर्ग में देखा और सुना है वह उसके बारे में बताते हैं,
परंतु कुछ ही लोग उनकी बातों पर विश्वास करते हैं! 33परंतु जो कोई
उनकी बात पर विश्वास करता है, यह दिखाता है कि परमात्मा सत्य
हैं। 34पुत्र को परमात्मा ने परमस्वर्ग से इसलिए भेजा कि वह परमात्मा
के संदेश दूसरों को बताएँ। और परमात्मा ने प्रभु येशु को पवित्र आत्मा
की पूरी शक्तियाँ दी है।
35पिता परमात्मा पुत्र से प्रेम करते हैं और उन्होंने उनके हाथ में
सबकुछ दे दिया है। 36जो कोई पुत्र पर आस्था रखता है उसे मोक्ष प्राप्त
होता है। परंतु जो पुत्र के आदेश का पालन नहीं करता, उसे मोक्ष कभी
नहीं मिलेगा, बल्कि परमात्मा का क्रोध उस पर बना रहता है।

4
मोक्ष देने वाला पानी

1गुरु येशु को पता चला कि फरीसी धार्मिक पंथ के कुछ लोग जान
गए हैं कि वह योहन के मुकाबले अधिक शिष्य बना रहे थे और
उन्हें समर्पण-स्नान दे रहे थे। 2लेकिन वास्तव में, गुरु येशु के शिष्य
समर्पण-स्नान दे रहे थे, न कि स्वयं गुरु येशु। 3तो प्रभु येशु ने यहूदिया
प्रदेश छोड़ दिया और फिर से गलील प्रदेश को चले गए।
4गुरु येशु को समेरिया प्रदेश होकर जाना ही था। 5तो वह वहाँ के
सूखार नगर में पहुँचे। यह नगर उस भूमि के पास था जो याकोब ने

बहुत साल पहले अपने पुत्र योसफ को दी थी। 6वहाँ याकोब का कुआँ
था और गुरु येशु यात्रा से थक कर कुएँ पर बैठ गए। यह दोपहर का
समय था।
7इतने में समेरिया प्रदेश की एक स्त्री जल भरने आई। गुरु येशु ने
उससे कहा, “मुझे पीने को पानी दो।” 8गुरु येशु उस समय अकेले थे,
क्योंकि उनके शिष्य भोजन खरीदने के लिए नगर में गए हुए थे। 9स्त्री
ने उनसे कहा, “आप यहूदी होकर मुझ समेरिया स्त्री से पानी क्यों माँग
रहे हैं?” उसने यह इसलिए कहा क्योंकि यहूदी लोग समेरिया लोगों से
किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखते थे।
10गुरु येशु ने उत्तर दिया, “यदि तुम जानतीं कि परमात्मा तुम्हें क्या
वरदान देना चाहते हैं और यदि जानतीं कि जो तुमसे पानी माँग रहा है
वह कौन है, तो तुम उससे माँगतीं और वह तुम्हें मोक्ष देने वाला पानी
देता!”
11स्त्री ने कहा, “गुरुजी, आपके पास पानी निकालने के लिए कुछ
भी नहीं है, और कुआँ गहरा है। तो मोक्ष देने वाला पानी आपके पास
कहाँ से आएगा? 12आप हमारे पूर्वज याकोब से महान तो हैं नहीं।
उन्होंने हमको यह कुआँ प्रदान किया और उसमें से स्वयं उन्होंने, उनके
पुत्रों ने और उनके पशुओं ने भी पानी पिया।”
13गुरु येशु ने उत्तर दिया, “जो इस कुएँ के पानी को पिएगा, वह फिर
प्यासा होगा। 14किंतु जो भी स्त्री या पुरुष उस पानी को पिएगा जो मैं
दूँगा, वह फिर कभी प्यासा न होगा। जो पानी मैं उसे दूँगा, वह उसमें
वह झरना बन जाएगा जो मोक्ष पाने के लिए उमड़ता रहता है।”
15स्त्री ने कहा, “गुरुजी, मुझे वह पानी दीजिए कि मैं फिर प्यासी न
होऊँ और न यहाँ पानी भरने आऊँ!”

अंतर्यामी और मुक्तिदाता

16गुरु येशु ने कहा, “जाओ, अपने पति को बुला लाओ।”
17स्त्री ने उत्तर दिया, “मेरा पति नहीं है।”
गुरु येशु ने कहा, “तुमने सच कहा, ‘मेरा पति नहीं है,’ 18क्योंकि तुम
अब तक पाँच पति कर चुकी हो और इस समय जो तुम्हारे पास है वह
भी तुम्हारा पति नहीं। यह तुमने सच कहा है।”

19स्त्री बोली, “गुरुजी, अब मैं समझ गई हूँ कि आप परमात्मा के
प्रवक्ता हैं! 20हमारे पूर्वजों ने इस नज़दीक पहाड़* पर भक्ति की और
आप यहूदी लोग कहते हैं कि यरूशलम शहर ही वह स्थान है जहाँ
लोगों को भक्ति करनी चाहिए।”
21गुरु येशु ने कहा, “हे स्त्री, मेरा विश्वास करो। वह समय आ रहा है जब
तुम लोग न तो इस पहाड़ पर और न यरूशलम शहर में पिता परमात्मा की
भक्ति करोगे। 22तुम समेरिया लोग उसकी भक्ति करते हो जिस के बारे में
तुम्हें ज्ञान नहीं। हम यहूदी उसकी भक्ति करते हैं जिसे हम जानते हैं, क्योंकि
मुक्ति-मार्ग* यहूदियों में से है। 23फिर भी वह समय आ रहा है, और आ ही
गया है, जब सच्चे भक्त पिता परमात्मा की भक्ति, आत्मा और सच्चाई से
करेंगे, क्योंकि पिता परमात्मा ऐसे ही भक्त चाहता है। 24परमात्मा आत्मा है,
और यह ज़रूरी है कि उसके भक्त आत्मा और सच्चाई से उसकी भक्ति करें।”
25स्त्री ने कहा, “मैं जानती हूँ कि परमात्मा द्वारा नियुक्त व्यक्ति,
जिन्हें मुक्तिदाता कहा जाता है, आ रहे हैं। जब वह आएँगे तब हम
को सारी सच्चाई बता देंगे।”
26गुरु येशु बोले, “मैं वही मुक्तिदाता हूँ।”
27उसी समय गुरु येशु के शिष्य आ गए और वे यह देखकर हैरान
रह गए कि वह एक स्त्री से बात कर रहे हैं, पर उनमें से किसी ने नहीं
पूछा, “आप उस स्त्री से क्या जानना चाहते हैं,” या “आप उससे क्यों
बात कर रहे हैं?” 28उस स्त्री ने अपना घड़ा वहीं छोड़ा और नगर में
जाकर सभी लोगों से कहने लगी, 29“आओ, मैं आप लोगों को एक
व्यक्ति से मिलाती हूँ। वह मुझ से पहली बार मिले हैं, परंतु फिर भी
उन्होंने मेरे बारे में सब कुछ बता दिया। कहीं वह मुक्तिदाता तो नहीं?”
30तो लोग नगर से निकले और गुरु येशु की ओर जाने लगे।
31इसी बीच शिष्यों ने उनसे कहा, “गुरुजी, भोजन कर लीजिए।”
32उन्होंने उत्तर दिया, “मेरे पास खाने को वह भोजन है जिसे तुम नहीं
जानते।”
33शिष्य आपस में कहने लगे, “कोई इनके लिए भोजन तो नहीं
लाया?”

---

* **4:20** *इस नज़दीक पहाड़* - इस पहाड़ का नाम “गेरिज़िम” है। * **4:22** *मुक्ति-मार्ग* - या, “मुक्ति”

34तब गुरु येशु ने उनसे कहा, “मेरे लिए असली भोजन यह है कि मैं
अपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार चलूँ और उनका कार्य पूरा
करूँ। 35क्या तुम नहीं कहते, ‘चार महीने और बाकी हैं तब फसल
काटने का समय आएगा?’ पर मैं कहता हूँ, आँखें उठाओ और खेतों
पर नज़र डालो। वे कटने के लिए पक चुके हैं।
36“काटने वाला मज़दूरी पा रहा है और उनके द्वारा काटे गए फल
मोक्ष प्राप्ति के लिए लाए गए लोग हैं, जिससे बोने वाला और काटने
वाला दोनों खुशियाँ मनाएँ। 37तो यहाँ यह कहावत सच साबित होती
है, ‘बोने वाला और है, काटने वाला और।’ 38जिसके लिए तुमने कोई
मेहनत नहीं की, उसे काटने के लिए मैंने तुम्हें भेजा। दूसरों ने मेहनत
की और उन की मेहनत का फल तुम्हें प्राप्त हुआ।”

संसार के मसीहा

39उस नगर के बहुत से समेरिया लोगों ने गुरु येशु पर आस्था प्रकट
की क्योंकि उस स्त्री ने ऐसा कहा था, “उन्होंने मेरे बारे में सब कुछ
बता दिया।” 40इन समेरिया लोगों ने आकर गुरु येशु से विनती की,
“हमारे साथ रहिए।” तो वह उनके साथ दो दिन रहे। 41और उनके
प्रवचन सुनकर बहुत सारे लोगों ने उन पर आस्था रखी। 42समेरिया
लोग उस स्त्री से बोले, “हमने केवल तुम्हारे कहने पर ही विश्वास
नहीं किया, परंतु हमने स्वयं उनको सुना है और हम जानते हैं कि वह
वास्तव में संसार के मसीहा हैं।”

मृत्यु के पंजों से बालक का छुटकारा

43दो दिन के बाद गुरु येशु वहाँ से निकलकर गलील प्रदेश को
गए। 44गुरु येशु ने स्वयं कहा था कि परमात्मा के प्रवक्ता को अपनी
जन्म-भूमि में आदर सम्मान नहीं दिया जाता। 45फिर भी जब वह गलील
पहुँचे तब गलील के निवासियों ने उनका स्वागत किया, क्योंकि वे लोग
जो मुक्ति-त्यौहार मनाने वहाँ गए थे, वे उन सब चमत्कारी कामों को देख
चुके थे जो गुरु येशु ने त्यौहार के अवसर पर यरूशलम शहर में किए थे।
46तब गुरु येशु फिर से गलील प्रदेश के काना नगर में आए जहाँ
उन्होंने पानी को अंगूर-रस में बदल दिया था। वहाँ राज्य का एक

अधिकारी था जिसका बेटा कफरनहूम शहर में बहुत बीमार था। [47]जब
उसने सुना कि गुरु येशु यहूदिया प्रदेश से गलील में आए हुए हैं तब वह
उनके पास आया। उसने गुरु येशु से विनती की कि वह उसके साथ
चलें और उसके बेटे को ठीक करें, क्योंकि उसका बेटा मरने ही वाला
था।
[48]गुरु येशु ने उससे कहा, "जब तक तुम लोग चमत्कार और अद्‌भुत
काम नहीं देखोगे तब तक मुझ पर विश्वास नहीं करोगे।"
[49]अधिकारी ने विनती की, "प्रभुजी, इससे पहले कि मेरा बेटा मर
जाए, कृपया मेरे साथ चलिए।"
[50]गुरु येशु ने उससे कहा, "घर जाओ, तुम्हारा बेटा ठीक हो गया है।"
अधिकारी ने प्रभु येशु की बात पर विश्वास किया और चला गया।
[51]अभी वह रास्ते में ही था कि उसे उसके सेवक मिले और उन्होंने
कहा, "आपका बेटा ठीक हो गया है!"
[52]अधिकारी ने उनसे पूछा कि मेरे बेटे की तबियत कब ठीक होने
लगी, और उन्होंने जवाब दिया, "कल दोपहर एक बजे उसका बुखार
अचानक उतर गया।" [53]पिता समझ गया कि यह ठीक उसी समय
हुआ जब गुरु येशु ने कहा था, "तुम्हारा बेटा नहीं मरेगा। वह ठीक हो
जाएगा।" इस कारण, स्वयं उसने और उसके पूरे परिवार ने प्रभु येशु
पर आस्था प्रकट की।
[54]यह दूसरा चमत्कार था जो प्रभु येशु ने यहूदिया प्रदेश से आकर
गलील प्रदेश में दिखाया जिससे उनका तेज प्रकट हुआ।

5

चमत्कारी तालाब के पास गुरु येशु

[1]इसके बाद यहूदियों के एक त्यौहार पर प्रभु येशु यरूशलम शहर
गए। [2]यरूशलम शहर में भेड़ द्वार नामक फाटक के पास एक तालाब है
जो इब्रानी भाषा* में बैथसदा+ कहलाता है। उस तालाब के चारो ओर
पाँच छतदार आँगन थे। [3]इनमें बहुत से बीमार जैसे अंधे, लँगड़े और
लकवा-पीड़ित पड़े रहते थे। [4-5]+वहाँ एक मनुष्य था जो अड़तीस साल

---

* **5:2** *इब्रानी भाषा* - या, "अरामी भाषा"

से बीमार था। [6]गुरु येशु ने उसे पड़े हुए देखा। उन्हें मालूम हुआ कि वह
बहुत समय से बीमार है, इसलिए गुरु येशु ने उससे कहा, “क्या तुम
ठीक होना चाहते हो?”
[7]बीमार ने उत्तर दिया, “गुरु जी, मेरी सहायता करने वाला कोई नहीं
है जो जल के हिलने पर मुझे तालाब में उतारे। मेरे जाते-जाते मुझसे
पहले कोई अन्य बीमार पानी में उतर जाता है।”
[8]प्रभु येशु ने कहा, “उठो, अपना बिस्तर उठाओ और चलो।” [9]वह
मनुष्य उसी वक्त ठीक हो गया और बिस्तर उठाकर चलने-फिरने
लगा!
परंतु यह चमत्कार आराम दिवस के दिन हुआ। [10]इसलिए यहूदी
धर्मगुरुओं ने ठीक हुए व्यक्ति से कहा, “आज आराम-दिवस है,
बिस्तर उठाना तुम्हारे लिए मना है।”
[11]उसने कहा, “जिन्होंने मुझे ठीक किया, उन्होंने मुझसे कहा, ‘अपना
बिस्तर उठाओ और चलो!’”
[12]उन्होंने पूछा, “वह कौन मनुष्य है जिसने तुमसे कहा कि
बिस्तर उठाओ और चलो?” [13]ठीक हुआ व्यक्ति नहीं जानता था
कि प्रभु येशु कौन हैं, क्योंकि प्रभु येशु बिना किसी को कुछ बताए
भीड़ में कहीं चले गए। [14]फिर कुछ समय बाद प्रभु येशु को वह
व्यक्ति मंदिर के आँगन में मिला और प्रभु ने उससे कहा, “देखो,
तुम ठीक हो गए हो। आगे पाप न करना कहीं ऐसा न हो कि
तुम्हारा हाल इससे ज़्यादा बुरा हो जाए।” [15]उस मनुष्य ने जाकर
यहूदी धर्मगुरुओं से कहा, “जिन्होंने मुझे ठीक किया है, वह गुरु
येशु हैं।”
[16]इस कारण यहूदी धर्मगुरु गुरु येशु को सताने लगे कि वह
आराम-दिवस पर भी बीमारों को ठीक करते थे। [17]गुरु येशु ने
धर्म गुरुओं से कहा, “मेरे पिता परमात्मा हमेशा काम कर रहे हैं
इसलिए मैं भी हमेशा काम कर रहा हूँ।” [18]अब कुछ यहूदी धर्म
गुरुओं ने गुरु येशु को जान से मार डालने की ठान ली, क्योंकि
वह आराम-दिवस के नियम ही नहीं तोड़ते थे, परंतु परमात्मा को
अपना पिता कहकर अपने आपको परमात्मा के बराबर भी बोलते
थे।

गुरु येशु ने धार्मिक गुरुओं के आरोपों का जवाब दिया

19प्रभु येशु ने लोगों से कहा, “मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, पुत्र*
अपने आप से कुछ नहीं करता। वह वही करता है जो पिता परमात्मा को
करते हुए देखता है। जो कुछ पिता परमात्मा करते हैं वह पुत्र भी करता है।
20पिता परमात्मा अपने पुत्र से प्रेम करते हैं और पिता परमात्मा जो कुछ
करते हैं, वह सब पुत्र दिखाते हैं। और इनसे भी बड़े काम उसे दिखाएँगे,
कि तुम हैरान हो जाओगे। 21क्योंकि जिस प्रकार पिता परमात्मा अपने मरे
हुओं भक्तों को मोक्ष देते हैं, उसी प्रकार पुत्र भी जिसे चाहे मोक्ष देते हैं।
22“वास्तव में, पिता परमात्मा स्वयं किसी के कर्मों का न्याय नहीं
करते, क्योंकि उन्होंने न्याय करने का पूरा अधिकार अपने पुत्र को दे
दिया है 23कि जिस प्रकार सब पिता परमात्मा का आदर करते हैं, उनके
पुत्र का भी वैसे ही आदर करें। जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह
पिता परमात्मा का भी आदर नहीं करता जिन्होंने पुत्र को भेजा है। 24मैं
तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ कि जो मेरा संदेश सुनता और मेरे भेजने
वाले पर आस्था रखता है, उसे मोक्ष मिलता है और वह दंड का भागी
नहीं होगा, परंतु वह मृत्यु को पार कर मोक्ष प्राप्त कर चुका है।
25“मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, वह समय आ रहा है और अब
है, जब मरे हुए लोग परमात्मा-पुत्र की आवाज़ सुनेंगे और जो सुनेंगे, वे
ज़िन्दा हो जाएँगे। 26क्योंकि जिस प्रकार पिता परमात्मा स्वयं मोक्ष देने
की शक्ति का आधार हैं, उसी प्रकार उन्होंने पुत्र को भी मोक्ष प्रदान
करने की शक्ति दी है। 27और परमात्मा ने उन्हें हर व्यक्ति का न्याय
करने का अधिकार दिया है, क्योंकि वह तेजस्वी मानव-पुत्र है।
28“मेरी इस बात से तुम्हें हैरान नहीं होना चाहिए, क्योंकि समय आ
रहा है कि सभी मरे हुए लोग* पुत्र की आवाज़ सुनकर 29ज़िन्दा हो
जाएँगे। अच्छे काम करने वाले मोक्ष प्राप्त करने के लिए ज़िन्दा हो
जाएँगे और बुरे कर्म करने वाले दंड पाने के लिए ज़िन्दा होंगे।
30“मैं स्वयं अपने से कुछ भी नहीं करता। जैसी आज्ञा मुझे मेरे पिता
परमात्मा से मिलती है वैसा ही न्याय करता हूँ और मेरा न्याय एकदम

---

* **5:19** *पुत्र* - या, “परमात्मा-पुत्र प्रभु येशु” * **5:28** *सभी मरे हुए लोग* - या, “सभी जो कब्र में हैं,” लेकिन इसका अर्थ है, “जो मर चुके हैं।”

सही होता है, क्योंकि मैं अपने आप को खुश करने के लिए ऐसा नहीं
करता, परंतु मैं पिता परमात्मा को खुश करता हूँ जिन्होंने मुझे भेजा है।
31 "अगर मैं अपनी तारीफ खुद करूँ तो मेरी बात की सच्चाई जानने
का कोई तरीका नहीं कोई नहीं हैं। 32 लेकिन कोई और मेरी तारीफ
करता है। तो मुझे पता है कि वो जो कह रहा है वो सच है। 33 तुमने
अपने लोगों को मेरे बारे में जानने के लिए योहन के पास भेजा है।
योहन ने जो कुछ तुमसे मेरे बारे में कहा है, वह सच है। 34 हालाँकि,
मुझे किसी व्यक्ति की ज़रूरत नहीं की वह मेरी बातों को साबित करे,
किंतु मैं यह बात इसलिए कहता हूँ कि तुम्हें मुक्ति प्राप्त हो। 35 योहन
एक तेज रोशनी देने वाले दीपक के समान थे। थोड़े समय तक तुम
उनकी शिक्षा के प्रकाश में खुशी से चलते रहे।
36 "लेकिन सिर्फ योहन ही नहीं है जो बताता है कि मैं कौन हूँ। और
भी चीज़ें हैं जो इस बात को स्पष्ट करती हैं। पिता परमात्मा ने मुझे जो
काम सौंपे हैं उन कामों को पूरा करना ही प्रमाणित करता है कि पिता
परमात्मा ने मुझे भेजा है।
37 "और पिता परमात्मा ने भी, जिन्होंने मुझे भेजा है, मेरी तारीफ करते
हैं। तुम लोगों ने कभी उनकी आवाज़ नहीं सुनी, न उनका रूप देखा है
38 और न उनके संदेश तुममें वास करते हैं, क्योंकि जिसे उन्होंने भेजा है,
उस पर तुम विश्वास नहीं करते।
39 "परमात्मा-ग्रंथ का तुम अध्ययन करते हो, क्योंकि तुम्हारा विश्वास
है कि यह ग्रंथ तुम्हें मोक्ष देगा। परंतु यह ग्रंथ तुम्हें मेरे बारे में ही बताता है
40 और फिर भी तुम यह मोक्ष प्राप्त करने के लिए मेरे पास नहीं आना चाहते!
41 "इंसान द्वारा सम्मान पाना मेरा लक्ष्य नहीं है, 42 परंतु मैं जानता हूँ
कि तुम दिल से परमात्मा से प्रेम नहीं करते। 43 मैं अपने पिता परमात्मा
के अधिकार से आया हूँ परंतु तुम मुझे स्वीकार नहीं करते। यदि कोई
अन्य अपने अधिकार से आए तो उसको तुम स्वीकार करोगे। 44 तुम
मुझमें विश्वास कैसे कर सकते हो जबकि तुम आपस में एक-दूसरे से
प्रशंसा चाहते हो और तुम उस प्रशंसा की खोज नहीं करते जो केवल
एक मात्र परमात्मा से प्राप्त होती है।
45 "यह मत सोचो कि पिता परमात्मा के सामने मैं तुम पर आरोप
लगाऊँगा। तुम पर आरोप लगाने वाले तो परमात्मा के प्रवक्ता मोशे हैं

जिन पर तुमने भरोसा किया हुआ है। 46यदि तुम मोशे पर विश्वास करते
तो मुझ पर भी विश्वास करते, क्योंकि उन्होंने मेरे बारे में लिखा है।
47परंतु यदि तुम उनके लिखे पर विश्वास नहीं करते, तो मेरे कहने पर
कैसे विश्वास करोगे?"

6

गुरु येशु ने अद्‌भुत तरीके से भोजन जुटाया

1इसके कुछ समय बाद प्रभु येशु तिबिरियस झील, अर्थात् गलील
की झील, के उस पार चले गए। 2वह जहाँ भी जाते थे, बड़ी भीड़ उनके
पीछे-पीछे चलती थी, क्योंकि वह चमत्कार करते थे। जब वह बीमारों
को ठीक कर देते थे तो लोग उनके तेज को देख कर हैरान रह गए। 3तब
गुरु येशु पहाड़ पर गए और वहाँ शिष्यों के साथ बैठ गए। 4यहूदियों का
मुक्ति-त्यौहार निकट था। 5गुरु येशु ने देखा की एक बड़ी भीड़ उनकी
ओर आ रही है। उन्होंने अपने शिष्य फिलिपस से कहा, "हम इनको
खिलाने के लिए कहाँ से खाना खरीदें?" 6प्रभु येशु ने यह उसको परखने
के लिए कहा था, क्योंकि वह जानते थे कि वह क्या करने वाले हैं।
7फिलिपस ने उन्हें उत्तर दिया, "दो सौ चाँदी के सिक्कों* से भी हम हर
एक को सिर्फ थोड़ा-सा खाना ही दिला पाएँगे।"
8गुरु येशु के एक और शिष्य अंदरियास, जो शिमोन पतरस का भाई
था, बोला, 9"यहाँ एक बालक है। उसके पास जौ के आटे की पाँच
रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। पर इनसे इतनों के लिए क्या होगा?"
10गुरु येशु ने कहा, "सभी लोगों को बैठा दो।"
उस स्थान पर बहुत घास थी तो सब लोग बैठ गए। उनमें केवल
पुरुषों ही की संख्या लगभग पाँच हज़ार थी। 11तब गुरु येशु ने रोटियाँ
लीं और परमात्मा को धन्यवाद देकर बैठे हुए लोगों में बाँट दीं। इसके
बाद उन्होंने मछलियाँ भी जितनी वे चाहते थे बाँट दीं।
12जब लोगों के पेट भर गए तब गुरु येशु ने अपने शिष्यों से कहा,
"बचे हुए खाने को टोकरों में रख दो और कुछ भी बर्बाद न होने दो।"

---

* **6:7** *दो सौ चाँदी के सिक्कों* - उस समय में दो सौ चाँदी के सिक्के लगभग एक मजदूर का 8 महीने का वेतन होता था। इस चाँदी के सिक्के को "डेनारियस" कहा जाता था।

[13]शिष्यों ने ऐसा ही किया। जौ की पाँच रोटियों से, जो भोजन करने
वालों से बच गईं थीं, बारह टोकरियाँ भर गईं।
[14]गुरु येशु का यह चमत्कार देखने के बाद लोग कहने लगे, “यह
वास्तव में वही परमात्मा के प्रवक्ता हैं जिनके संसार में आने का हम
इंतज़ार कर रहे थे!” [15]तब गुरु येशु पहाड़ पर थोड़ा और ऊपर चले
गए, क्योंकि वह जानते थे कि लोग उन्हें ज़बरदस्ती राजा बनाने के
लिए ले जाना चाहते हैं।

गुरु येशु पानी पर चले

[16]जब शाम हुई तब गुरु येशु के शिष्य झील के किनारे पर गए। [17]वे
नाव पर चढ़कर झील की दूसरी ओर कफरनहूम शहर को जाने लगे।
अँधेरा हो चुका था, और गुरु येशु अभी तक उनके पास नहीं आए थे।
[18]उसी समय तूफान आ गया और झील में लहरें उठने लगीं। [19]लगभग
पाँच किलोमीटर नाव खेने के बाद उन्होंने देखा कि गुरु येशु झील पर
चलते हुए नाव के पास आ रहे हैं, तो वे डर गए। [20]किंतु गुरु येशु ने
उनसे कहा, “मैं हूँ, डरो मत!” [21]तब वे प्रभु येशु को नाव में चढ़ाने को
तैयार हो गए और नाव तुरंत उस किनारे पर पहुँच गई जहाँ उन्हें जाना
था।

प्रभु येशु की खोज में

[22]दूसरे दिन झील के पास जो लोग रह गए थे उन्होंने देखा कि यहाँ
तो केवल एक नाव थी। वे जानते थे कि गुरु येशु अपने शिष्यों के
साथ नाव पर नहीं चढ़े थे, केवल उनके शिष्य ही विदा हुए थे। [23]तब
तिबिरियस नगर से अन्य नावें उस स्थान के पास आ पहुंची जहाँ प्रभु
येशु परमात्मा को धन्यवाद देने के बाद+ लोगों ने रोटी खायी थी।
[24]जब लोगों ने देखा कि न तो गुरु येशु वहाँ हैं और न उनके शिष्य, तब
वे नावों पर चढ़कर गुरु येशु की खोज में कफरनहूम शहर गए। [25]लोगों
ने झील की दूसरी ओर गुरु येशु को पाया और उन्होंने उनसे पूछा,
“गुरुजी, आप यहाँ कब पहुँचे?”
[26]गुरु येशु ने उत्तर दिया, “मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, तुम मुझे
इसलिए नहीं ढूँढ रहे हो कि तुमने मेरे परमात्मा-पुत्र होने की चमत्कारी

निशानियाँ देखीं हैं, परंतु इसलिए कि तुम्हें पेट भर रोटियाँ मिली हैं।
[27]जो भोजन सड़ जाता है ऐसे भोजन के लिए ही मेहनत न करो, परंतु
मोक्ष प्राप्ति के लिए मेहनत करो जिसे तेजस्वी मानव-पुत्र तुम्हें देगा।
पिता परमात्मा ने तेजस्वी मानव-पुत्र को ऐसा करने का अधिकार
दिया है।"
[28]फिर लोगों ने उनसे पूछा, "परमात्मा को खुश करने के लिए क्या
करना चाहिए?"
[29]गुरु येशु ने उत्तर दिया, "परमात्मा को खुश करने के लिए तुम उन
पर आस्था रखो जिन्हें उन्होंने भेजा है।"
[30]तब उन्होंने गुरु येशु से कहा, "आप कौन सा चमत्कार करेंगे जिससे
हम आप पर आस्था प्रकट करें? आप क्या करेंगे? [31]हमारे पूर्वजों ने
सुनसान बंजर जगह में 'मन्ना' नामक रोटी खाई थी जैसे परमात्मा-ग्रंथ
में लिखा है, 'परमात्मा ने उन्हें परमस्वर्ग से रोटी दी।'"
[32]गुरु येशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, तुम्हें
परमस्वर्ग से मन्ना-रोटी परमात्मा के प्रवक्ता मोशे ने नहीं दी। मेरे पिता
परमात्मा तुम्हें परमस्वर्ग से सच्ची रोटी देते हैं। [33]परमात्मा की सच्ची रोटी
वह है जो परमस्वर्ग से उतरकर संसार के लोगों को मोक्ष देती है।"
[34]लोगों ने कहा, "गुरुजी, हमें यह रोटी हमेशा दिया करें।"
[35]गुरु येशु ने उत्तर दिया, "मैं वह रोटी हूँ जो मोक्ष देती है। जो मेरी
शरण में आता है, और जो मुझ पर आस्था रखता है, उसकी भूख और
प्यास मिट जाएगी। [36]मैं तुमसे कह चुका हूँ कि तुमने मुझे+ देख लिया
है, फिर भी मुझ पर आस्था नहीं रखी। [37]वे सभी, जो पिता परमात्मा ने
मुझे दिए हैं, मेरे पास आएँगे। और जो कोई मेरे पास आता है, उसको
मैं अपने से कभी दूर नहीं करूँगा। [38]क्योंकि मैं अपनी नहीं, परंतु अपने
भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिए परमस्वर्ग से उतरा हूँ। [39]और
मेरे भेजने वाले की इच्छा यह है कि जिनको उन्होंने मुझे सौंपा है, उनमें
से किसी को भी न खोऊँ, परंतु इस संसार के अंत में अच्छे और बुरे
कर्मों के न्याय के दिन उन सबको ज़िन्दा करूँ। [40]मेरे पिता परमात्मा
की इच्छा यह है कि जो पुत्र को देखे और उस पर आस्था रखे उन्हें

6:31 निर्गमन 16:14-15; भजन शास्त्र 78:24

मोक्ष मिले और मैं उन्हें बुरे और अच्छे कर्मों के न्याय के दिन ज़िन्दा
कर दूँगा।”
41तब क्योंकि गुरु येशु ने कहा था, “परमस्वर्ग से उतरी हुई रोटी मैं
हूँ,” कुछ यहूदी लोग आपस में बुड़बुड़ाने लगे। 42वे कह रहे थे, “क्या
यह योसफ का पुत्र येशु नहीं, जिसके माता-पिता को हम जानते हैं? तो
यह कैसे कहता है कि मैं परमस्वर्ग से आया हूँ?”
43गुरु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मेरे बारे में कानाफूसी मत करो।
44कोई भी मेरे पास तब तक नहीं आ सकता जब तक पिता परमात्मा
जिन्होंने मुझे भेजा है, उन्हें मेरे पास आने की शक्ति न दें। और मैं उन्हें
अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के दिन ज़िन्दा कर दूँगा। 45परमात्मा के
प्रवक्ताओं ने लिखा है, ‘वे सब परमात्मा द्वारा सिखाए जाएँगे।’ जिस
किसी ने पिता परमात्मा से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है।
46“यह नहीं कि किसी ने पिता परमात्मा को देखा है, केवल उसी ने,
जो परमात्मा की ओर से है, पिता परमात्मा को देखा है। 47मैं तुम पर
सच्चाई प्रकट करता हूँ, जो आस्था रखता है, उसे मोक्ष प्राप्त होता है।
48“मोक्ष देने वाली रोटी मैं हूँ। 49तुम्हारे पूर्वजों ने सुनसान बंजर जगह
में मन्ना खाया परंतु फिर भी वे मर गए। 50-51परमस्वर्ग से उतरी मोक्ष देने
वाली रोटी मैं हूँ। यदि कोई इस रोटी में से खाएगा, वह हमेशा ज़िन्दा
रहेगा। मेरा शरीर मोक्ष देने वाली रोटी है जो मैं संसार के लोगों के लिए
देता हूँ।”
52फिर जो यहूदी लोग प्रभु येशु के विरोधी थे आपस में बहस करने
लगे कि उनका क्या मतलब था, “यह हमें खाने के लिए अपना शरीर
कैसे दे सकता है?”
53गुरु येशु ने कहा, “मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, जब तक तुम
तेजस्वी मानव-पुत्र का शरीर न खाओ और उसका खून न पियो,* तुममें
मोक्ष नहीं। 54जो मेरा शरीर खाता और मेरा खून पीता है, उसको मोक्ष
प्राप्त होता है और उसे मैं अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के दिन ज़िन्दा
करूँगा। 55मेरा शरीर सच्चा आत्मिक भोजन है और मेरा खून सच्चा

6:45 यशायाह 54:13 * **6:53** *शरीर न खाओ और उसका खून न पियो* - इन शब्दों को लेने का अर्थ प्रभु येशु के जीवन और उनकी पीड़ा में आत्मिक रूप से भाग लेना है (6:63देखें)।

आत्मिक पेय है। [56]जो मेरा शरीर और खून का सेवन करता है वह
मुझमें वास करता है और मैं उसमें।
[57]"जैसे जीवित पिता परमात्मा ने मुझे भेजा और मैं पिता परमात्मा
के कारण ज़िन्दा हूँ, इसी प्रकार जो मेरा सेवन करता है वह मेरे कारण
ज़िन्दा रहेगा। [58]परमस्वर्ग से उतरी हुई यह रोटी ऐसी नहीं जैसी तुम्हारे
पूर्वजों ने खाई परंतु फिर भी मर गए। जो इस रोटी का सेवन करेगा,
वह हमेशा जीवित रहेगा।"
[59]गुरु येशु ने कफरनहूम शहर के यहूदी सत्संग भवन में शिक्षा देते
हुए यह कहा।

गुरु येशु की शिक्षा आत्मिक और मोक्ष दायक

[60]यह सुनकर, बहुत से उनके शिष्यों ने कहा, "यह जो शिक्षा दे रहे हैं,
वह बहुत कठिन है। कोई व्यक्ति इन पर कैसे चल सकता है?"
[61]परंतु गुरु येशु ने मन में जान लिया कि उनके शिष्य इस बारे में
बुड़बुड़ा रहे हैं। तो उन्होंने कहा, "क्या इससे तुम्हें ठेस पहुंची? [62]और
यदि तुम तेजस्वी मानव-पुत्र को, जहाँ वह पहले था, वहाँ ऊपर जाते हुए
देखोगे, तब तुम क्या सोचोगे! [63]पवित्र आत्मा मोक्ष देती है। मनुष्य की
कोशिशों से कुछ लाभ नहीं। जो मैंने तुमसे कहा है, वह आत्मिक और
मोक्ष देने वाला है। [64]फिर भी तुम में से अनेक हैं जो मुझ पर आस्था नहीं
रखते।" गुरु येशु ने यह कहा क्योंकि उन्हें पहले से पता था कि कौन उन
पर आस्था नहीं रखते और वह कौन है जो उनसे विश्वासघात करेगा।
[65]वह बोले, "इसी कारण मैंने तुमसे कहा था कि जब तक पिता परमात्मा
मेरे पास आने की शक्ति न दे, कोई व्यक्ति मेरे पास नहीं आ सकता।"
[66]इसके बाद गुरु येशु के बहुत से शिष्य पीछे हट गए और उनका
साथ छोड़ दिया। [67]तब गुरु येशु ने अपने बारह राजदूतों से पूछा, "क्या
तुम लोग भी मुझे छोड़के जाना चाहते हो?"
[68]शिमोन पतरस ने उत्तर दिया, "प्रभुजी, हम किसके पास जाएँ? आप
ही के पास मोक्ष का संदेश है। [69]हमने आप पर आस्था प्रकट की है और
हम जान चुके हैं कि आप परमात्मा के भेजे हुए पवित्र मुक्तिदाता* हैं।"

---

* **6:69** *पवित्र मुक्तिदाता* - या "पवित्र पुत्र," या "पवित्र जन" है।

[70]तब गुरु येशु ने कहा, “क्या मैंने तुम बारह राजदूतों को नहीं चुना?
फिर भी तुममें से एक शैतान के वश में है।” [71]यह उन्होंने यहूदा
इस्करियोत, शिमोन इस्करियोत के बेटे के बारे में कहा था, जो प्रभु
येशु के बारह राजदूतों में से एक था। वह बाद में प्रभु येशु के साथ
विश्वासघात करने वाला था।

7

प्रभु येशु के अविश्वासी भाई

[1]इसके बाद, गुरु येशु केवल गलील प्रदेश के नगरों ही में जाते थे।
वह यहूदिया प्रदेश में जाना नहीं चाहते थे, क्योंकि यहूदी धर्मगुरु
उनकी हत्या करने की साज़िश कर रहे थे। [2]यहूदियों का तम्बू निवास
त्यौहार निकट था। [3]इसलिए प्रभु येशु के भाइयों ने उनसे कहा, “यहाँ
से निकलकर यहूदिया प्रदेश चले जाओ कि जो चमत्कार तुम करते
हो, उन्हें तुम्हारे शिष्य भी देखें, [4]क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो प्रसिद्ध
होना चाहे और गुप्त रहकर कार्य करे। यदि तुम ऐसे कार्य करते हो तो
अपने आपको संसार के सामने प्रकट करो।” [5]प्रभु येशु के भाइयों ने
ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं था कि वह मुक्तिदाता
है।

[6]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “मेरे लिए वहाँ जाना अभी ठीक नहीं है, पर
तुम्हारे लिए सब समय ठीक है। [7]यह संसार तुमसे नफरत नहीं करेगा,
परंतु वे मुझसे नफरत करते हैं, क्योंकि मैं उनके बुरे कामों के विरुद्ध
आवाज़ उठाता हूँ। [8]तुम त्यौहार मनाने जाओ। मैं त्यौहार मनाने अभी+
नहीं जा रहा हूँ, क्योंकि मेरे लिए वहाँ जाना अभी ठीक नहीं है।” [9]यह
कहकर गुरु येशु गलील प्रदेश में रह गए।

[10]जब गुरु येशु के भाई त्यौहार मनाने चले गए तब गुरु येशु भी लोगों
की नज़र से बचकर वहाँ पहुँच गए। [11]त्यौहार के समय कुछ यहूदी
उनको ढूँढ़ रहे थे और लोगों से पूछताछ कर रहे थे, “वह कहाँ है?”
[12]और लोगों में भी उनके बारे में बड़ी चर्चा थी। कुछ कहते थे, “वह
बहुत अच्छा मनुष्य है,” और कुछ कहते थे, “नहीं, वह लोगों को
धोखा दे रहा है।” [13]तो भी यहूदी धर्मगुरुओं के डर के मारे कोई भी
व्यक्ति लोगों के सामने प्रभु येशु का समर्थन नहीं करता था।

गुरु येशु परमात्मा की ओर से हैं

[14]जब त्यौहार आधा समाप्त हो चुका तब गुरु येशु परमात्मा के मंदिर
के आंगन में गए और वहाँ प्रवचन देने लगे। [15]यहूदी धर्मगुरुओं ने हैरान
होकर कहा, “इस व्यक्ति को हमारे गुरुओं से ज्ञान प्राप्त किए बिना
यह सब कैसे पता चला?”
[16]गुरु येशु ने उत्तर दिया, “जो शिक्षा मैं देता हूँ, वह मेरी ओर से नहीं
परंतु पिता परमात्मा की ओर से है, जिन्होंने मुझे भेजा है। [17]यदि कोई
परमात्मा की इच्छा पूरी करना चाहता है तो वह इस शिक्षा के बारे में
समझ जाएगा कि यह परमात्मा की ओर से है या मैं अपनी ओर से
बोल रहा हूँ। [18]जो अपने विचार रखता है, वह अपना आदर चाहता
है, पर जो अपने भेजने वाले का आदर चाहता है, वह सच्चा है, और
उसमें कोई छल नहीं। [19]मोशे के नियम तुम्हारे पास हैं, पर तुम में से
कोई भी व्यक्ति उन नियमों को नहीं मानता। असल में तुम मेरी हत्या
करना चाहते हो”
[20]लोगों ने कहा, “तुममें अशुद्ध आत्मा है! तुम्हें कौन मार डालना
चाहता है?”
[21]गुरु येशु ने उनको उत्तर दिया, “मैंने आराम-दिवस पर एक
चमत्कार किया है और इस पर तुम सब हैरान हो। [22]लेकिन तुम आराम
दिवस पर भी काम करते हो, जब तुम मोशे के चीरा-संस्कार के नियम
का पालन करते हो। (वास्तव में, मोशे से बहुत पहले चीरा-संस्कार
की यह परंपरा अब्राहम और उनके परिवार के साथ शुरू हुई)। [23]यदि
क्योंकि अगर तुम्हारे बेटों के लिए चीरा-संस्कार कराने का सही दिन*
आराम-दिवस पर होता है, तो तुम्हें ऐसा करने में कोई परेशानी नहीं
होती और तुम सोचते हो कि तुमने मोशे के नियम और शिक्षा के किसी
निया को नहीं तोड़ा। तो जब मैंने आराम-दिवस पर एक आदमी को
ठीक कर दिया तो तुम इस बात पर गुस्सा क्यों हो? [24]बिना सोचे-समझे
किसी के बारे में कोई धारणा न बनाए बनाएँ, सच को जनों और फिर
निर्णय लो।”

---

* **7:23** *सही दिन* - लड़के के जन्म के आठवें दिन सही दिन था जो कभी-कभी आराम-दिवस के दिन भी होता था।

मुझे परमात्मा ने भेजा है

[25]इस पर यरूशलम शहर के कुछ निवासी कहने लगे, “क्या यह
वही नहीं जिनको वे मार डालने की कोशिश कर रहे हैं? [26]परंतु देखो,
यह तो यहाँ खुलकर बोल रहा है, फिर भी कोई इसे रोकता नहीं। कहीं
ऐसा तो नहीं कि हमारे अधिकारियों ने सचमुच मान लिया है कि यह
मुक्तिदाता है? [27]पर इसको तो हम जानते हैं कि यह कहाँ से है। किंतु
जब मुक्तिदाता आएगा तो किसी को मालूम नहीं होगा कि वह कहाँ से
है।”

[28]तब गुरु येशु ने परमात्मा के मंदिर के आंगन में प्रवचन देते हुए
ऊँची आवाज़ से कहा, “क्या सच में तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ और
कहाँ से आया हूँ? मैं अपनी इच्छा से नहीं आया परंतु सच्चे परमात्मा
ने मुझे भेजा है जिन्हें तुम नहीं जानते। [29]लेकिन मैं उनको जानता हूँ,
क्योंकि मैं उनकी ओर से हूँ, और उन्होंने मुझे भेजा है।”

[30]इस पर वे गुरु येशु को गिरफ्तार करने की कोशिश करने लगे, परंतु
कोई उन्हें हाथ नहीं लगा सका, क्योंकि उनकी गिरफ्तारी का समय
अभी नहीं आया था।

[31]फिर भी भीड़ में से बहुत से लोगों ने उन पर आस्था प्रकट की और
कहा, “जब मुक्तिदाता आएगा तब वह क्या इस व्यक्ति से बढ़कर
चमत्कार दिखाएगा?”

[32]फरीसियों ने गुरु येशु के बारे में लोगों को इस प्रकार बातें करते
सुना तो उन्होंने और प्रधान पुरोहितों ने मंदिर के सुरक्षा कर्मियों को
भेजा कि वे गुरु येशु को गिरफ्तार करें। [33]तब गुरु येशु बोले, “थोड़ी
देर के लिए मैं तुम्हारे साथ हूँ, फिर मैं उनके पास जाऊँगा जिन्होंने मुझे
भेजा है। [34]तुम मुझे ढूँढ़ोगे और न पाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ तुम
नहीं आ सकते।”

[35]यहूदी धर्मगुरु आपस में कहने लगे, “यह कहाँ जाने को
है कि हम इसे नहीं पाएँगे? क्या यह ग्रीक भाषा बोलने वाले
प्रवासी-यहूदियों के पास जाने को है और ग्रीक भाषियों को
भी शिक्षा देगा? [36]यह क्या बात है जो इसने कही कि ‘तुम मुझे
ढूँढ़ोगे और न पाओगे’ और ‘जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ तुम नहीं आ
सकते?’”

जीवन-जल देने की प्रतिज्ञा

37-38त्यौहार के अंतिम दिन, जो त्यौहार का प्रमुख दिन माना जाता है,
गुरु येशु ने खड़े होकर ऊँची आवाज़ से कहा, "यदि कोई प्यासा है*
तो मेरे पास आए और पिए। जैसा परमात्मा-ग्रंथ का कहना है, 'जो मुझ
पर आस्था रखेगा उसके मन के भीतर से मोक्ष देने वाली नदियाँ फूट
पड़ेंगी।'" 39वह परमात्मा की पवित्र आत्मा के बारे में बात कर रहे थे,
इसे प्राप्त करने वाले वे लोग होंगे जो उन पर आस्था रखते थे। उन्हें
अभी तक उनकी पवित्र आत्मा नहीं मिला था क्योंकि परमात्मा ने गुरु
येशु को अभी तक सम्पूर्ण तेज प्रदान नहीं किया था।
40यह संदेश सुनकर कुछ लोग कहने लगे, "सचमुच यह वही परमात्मा
के प्रवक्ता हैं जो आने वाले थे।" 41कुछ अन्य कहने लगे, "यह
मुक्तिदाता हैं।" परंतु कुछ ने कहा, "मुक्तिदाता का आना गलील प्रदेश
से तो होगा नहीं। 42क्या परमात्मा-ग्रंथ में नहीं लिखा है कि राजा दाविद
के वंश से और दाविद के जन्म-स्थान बैथलहम से मुक्तिदाता का आना
होगा?" 43इस प्रकार गुरु येशु के कारण लोगों में मतभेद हो गया। 44कुछ
लोग उन्हें गिरफ्तार करना चाहते थे, पर कोई उन्हें हाथ नहीं लगा सका।

गुरु येशु की बातें अनोखा हैं

45तब मंदिर के सुरक्षा कर्मी प्रधान पुरोहितों और फरीसियों के पास
लौट गए। उन्होंने सुरक्षा कर्मियों से पूछा, "तुम उसे क्यों नहीं लाए?"
46उन्होंने उत्तर दिया, "जिस प्रकार यह व्यक्ति बातें करता है उस
प्रकार अब तक किसी ने नहीं की।"
47फरीसियों ने कहा, "क्या उसने तुम्हें भी धोखा दिया? 48क्या यहूदी
प्रधानों या फरीसियों में से किसी ने भी उसमें आस्था प्रकट की है?
49मोशे के नियम और शिक्षा के बारे में यह भीड़ कुछ नहीं जानती है तो
ये वैसे ही शापित है।"
50उनमें से एक व्यक्ति निकोदेमस ने जो पहले एक बार गुरु येशु के
पास आ चुका था, उनसे कहा, 51"क्या मोशे के नियम मनुष्य को, जब

---

* **7:37-38** *यदि कोई प्यासा है* - इन पदों का अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है, "यदि कोई प्यासा है तो मेरे पास आए और जो मुझ पर आस्था रखता है पिए! जैसा परमात्मा-ग्रंथ का कहना है, 'उसके मन के भीतर से मोक्ष देने वाली जल की नदियाँ फूट पड़ेंगी।'"

तक पहले उसका पक्ष सुन न ले और जान न ले कि उसने क्या किया
है, उसे दोषी ठहराते हैं?”
52उन्होंने उत्तर दिया, “क्या तुम भी गलील प्रदेश के निवासी नहीं हो?
परमात्मा-ग्रंथ का ध्यानपूर्वक अध्ययन करो तो तुम पाओगे कि गलील
प्रदेश में से कोई परमात्मा के प्रवक्ता पैदा नहीं आते।”
53[तब सब लोग अपने-अपने घर चले गए।] *

8

पहला पत्थर कौन मारे?

1[+गुरु येशु जैतून नामक पहाड़ी को चले गए 2और सुबह वह फिर
मंदिर के आँगन में आए। सारे लोग उनके पास आए और गुरु येशु
बैठकर उन्हें शिक्षा देने लगे।
3तब धर्मगुरु और फरीसी पंथ के लोग एक औरत को लाए जो
एक पुरुष के साथ गलत काम करती हुई पकड़ी गई। वे उसे बीच
में खड़ा करके बोले, 4“गुरुजी, यह औरत शादी के बाहर गलत
सम्बन्ध बनाते हुए पकड़ी गई है। 5मोशे के नियम और शिक्षा में
लिखा है कि ऐसी औरतों को पथराव कर मार डाला जाए। पर इस
पर आपकी क्या राय हैं?”
6उन्होंने यह प्रश्न गुरु येशु की परीक्षा करने के लिए पूछा था ताकि
वे उन पर आरोप लगा सकें। गुरु येशु नीचे झुककर अँगुली से भूमि
पर लिखने लगे। 7पर जब वे लोग उनसे पूछते ही रहे, तब उन्होंने
अपना सिर उठाकर कहा, “तुममें से जिस व्यक्ति ने कभी पाप न
किया हो, वह पहला पत्थर मारे।” 8और फिर नीचे झुककर भूमि पर
लिखने लगे।
9यह सुनकर पहले बड़े लोग और तब उसके बाद एक-एक करके
सब वहाँ से चले गए। केवल गुरु येशु और वह औरत, जो बीच में
खड़ी थी, वहाँ रह गए। 10गुरु येशु ने सिर उठाकर उस औरत से पूछा,
“बहन, वे लोग कहाँ हैं? क्या किसी ने तुम्हें दंड के योग्य नहीं समझा?”

---

* **7:53** *[तब सब लोग अपने-अपने घर चले गए।]* - यह अंश बहुत-सी प्राचीन हस्तलिपियों में नहीं पाया जाता।

[11]उसने कहा, “प्रभुजी, किसी ने नहीं।”
प्रभु येशु बोले, “मैं भी तुम्हें दंड की आज्ञा नहीं देता। जाओ, अब से फिर पाप न करना।”]

गुरु येशु संसार के लिए प्रकाश

[12]फिर गुरु येशु ने कहा, “मैं संसार के लिए प्रकाश हूँ। मेरा शिष्य अंधकार में नहीं भटकेगा, परंतु वह प्रकाश पाएगा जो उसे मोक्ष-मार्ग पर ले जाएगा।”
[13]फरीसी पंथ के कुछ लोग बोले, “तुम बस खुद की बड़ाई कर रहे हो, लेकिन कोई और नहीं है जो उसकी सच्चाई साबित करे।”
[14]गुरु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “यहाँ तक कि अगर मैं अपने बारे में बोलता हूँ, तो भी मेरे शब्द सच हैं। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया और कहाँ जा रहा हूँ। किंतु तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आया और कहाँ जा रहा हूँ। [15]तुम लोग बाहरी रूप से न्याय करते हो, परंतु मैं किसी का ऐसा न्याय नहीं करता। [16]और यदि मैं न्याय करूँ तो वह सच्चा होगा, क्योंकि न्याय मैं अकेला नहीं करता परंतु मैं और मेरे भेजने वाले पिता परमात्मा, दोनों साथ मिलकर न्याय करते हैं। [17]तुम्हारे मोशे के नियम और शिक्षा में भी लिखा है कि दो व्यक्तियों की गवाही सच मानी जाती है। [18]एक गवाह मैं हूँ और दूसरा गवाह मेरे पिता परमात्मा हैं, जिन्होनें मुझे भेजा है।”
[19]तब उन्होंने पूछा, “तुम्हारा पिता कहाँ है?”
गुरु येशु ने उत्तर दिया, “तुम न तो मुझे जानते हो और न मेरे पिता परमात्मा को। यदि तुम मुझे जानते तो मेरे पिता परमात्मा को भी जानते।”
[20]यह संदेश गुरु येशु ने मंदिर के आंगन में प्रवचन करते समय उस जगह पर दिया था, जहाँ दान लिया जाता था। परंतु किसी ने उनको गिरफ्तार नहीं किया, क्योंकि उनकी गिरफ्तारी का समय अभी नहीं आया था।

आनेवाले दंड के बारे में चेतावनी

[21]गुरु येशु ने फिर यहूदी धर्मगुरुओं से कहा, “मैं जा रहा हूँ, और तुम मुझे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते अपने ही पाप में मर जाओगे। क्योंकि जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।”

[22]तब धर्मगुरु आपस में कहने लगे, “क्या वह आत्महत्या तो नहीं
कर लेगा? क्योंकि वह कह रहा है, ‘जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ तुम नहीं
आ सकते।’”
[23]परंतु गुरु येशु ने कहा, “तुम पृथ्वी से हो, पर मैं परमात्मा से हूँ*। तुम
इस संसार के हो पर मैं इस संसार का नहीं हूँ। [24]मैंने कहा था कि तुम अपने
बुरे कर्मों का खाता मिटाए बिना ही मरोगे। क्योंकि यदि तुम विश्वास नहीं
करते कि मैं परमात्मा से आया हूँ,* तो तुम अपने पापों में ही मरोगे।”
[25]उन्होंने उनसे पूछा, “तुम कौन हो?”
गुरु येशु ने उत्तर दिया, “मैं तुम्हें शुरू से बता रहा हूँ कि मैं कौन हूँ।+ [26]मुझे
तुम्हारे बारे में बहुत कुछ कहना है और मैं गिना सकता हूँ की तुमने बहुत
से बुरे काम किए हैं, लेकिन मैं ऐसा नहीं करूँगा। जिन्होंने मुझे भेजा है वह
सच्चे हैं, और मैं वे बातें संसार को बताऊँगा जो उन्होंने मुझे बताई हैं।”
[27]वे अब तक यह समझ नहीं पाए थे कि गुरु येशु उनसे पिता
परमात्मा के विषय में कह रहे थे। [28]तब गुरु येशु ने कहा, “जब तुम
मुझे क्रूस पर चढ़ाओगे तब जानोगे कि मैं वही तेजस्वी मानव-पुत्र
हूँ। मैं अपने आप कुछ नहीं करता, परंतु जैसा पिता परमात्मा ने मुझे
सिखाया, वैसा ही मैं बोलता हूँ। [29]जिन्होंने मुझे भेजा, वह मेरे साथ हैं
और उन्होंने मुझे अकेला नहीं छोड़ा है, क्योंकि मैं हमेशा वही करता हूँ
जिससे वह खुश होते हैं।” [30]गुरु येशु जब ये बातें कह रहे थे तब बहुत
लोगों ने उन पर विश्वास किया।

मुक्त कैसे हों?

[31]गुरु येशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उन पर आस्था प्रकट की थी,
कहा, “यदि तुम मेरी शिक्षाओं पर चलते रहोगे तो तुम वास्तव में मेरे
शिष्य होगे। [32]और तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें मुक्त करेगा।”
[33]उन्होंने उत्तर दिया, “हम कुलपिता अब्राहम के वंशज हैं। हम कभी
किसी के गुलाम नहीं बने। तुम यह कैसे कहते हो, ‘तुम मुक्त हो
जाओगे?’”

---

* **8:23** *मैं परमात्मा से हूँ* - या, “मैं ऊपर का हूँ,” या, “मैं परमस्वर्ग से आया हूँ” * **8:24** *कि मैं परमात्मा से आया हूँ* - या, “कि मैं वही हूँ जिसका मैं दावा करता हूँ”

34गुरु येशु ने कहा, “मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, पाप करने
वाला हर एक व्यक्ति पाप का गुलाम है। 35गुलाम न तो परिवार का
सदस्य नहीं होता है और न ही हमेशा उस परिवार में रहता है, लेकिन
बेटा हमेशा परिवार का हिस्सा होता है। 36यदि पुत्र तुम्हें पापों से मुक्त
करे तो तुम वास्तव में मुक्त हो जाओगे। 37मैं जानता हूँ कि तुम
कुलपिता अब्राहम के वंशज हो, पर तुम मुझे मार डालने के उपाय कर
रहे हो, क्योंकि मेरे संदेश के लिए तुम्हारे मन में कोई स्थान नहीं है।
38जो कुछ मैंने अपने पिता परमात्मा के यहाँ देखा है, वही कहता हूँ।
उसी प्रकार तुमने जो अपने पिता+ से सुना, वही तुम करते हो।”
39उन्होंने गुरु येशु से कहा, “हमारे पिता अब्राहम हैं।”
गुरु येशु ने उत्तर दिया, “यदि तुम सच में कुलपिता अब्राहम की
संतान होते, तो अब्राहम के समान जीवन बिताते।+ 40मैंने वह सच्चाई
तुम पर प्रकट किया है जो परमात्मा ने मुझे* बताया था पर तुम मुझे
मारना चाहते हो। कुलपिता अब्राहम ने ऐसे काम नहीं किए। 41वास्तव
में तुम्हारा पिता कोई और है और तुम अपने पिता के समान जीवन
बिताते हो।”
वे बोले, “हम नाजायज़ संतान नहीं हैं और हमारे सच्चे पिता स्वयं
परमात्मा हैं।”
42गुरु येशु ने कहा, “यदि परमात्मा तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझसे
प्रेम करते, क्योंकि मैं परमात्मा की ओर से आया हूँ। मैं स्वयं नहीं
आया परंतु उन्होंने मुझे भेजा है। 43तुम मेरी बात क्यों नहीं समझ पा
रहे हो? क्योंकि तुम में मेरे संदेश सुनने की क्षमता ही नहीं है। 44तुम तो
अपने पिता शैतान से हो और उसकी इच्छा पूरी करना चाहते हो। वह
शुरू से ही हत्यारा था। वह सत्य पर नहीं चला, क्योंकि सत्य उसमें है
ही नहीं। जब वह झूठ बोलता है, अपने स्वभाव के अनुसार ही बोलता
है, क्योंकि वह झूठा और झूठों का पिता है।
45“परंतु मैं सच ही बोलता हूँ, इसलिए तुम मुझ पर विश्वास नहीं
करते। 46तुममें से कौन है जो मुझ पर पाप का दोष लगा सकता हो?
और यदि मैं सत्य कहता हूँ तो तुम मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करते?

---

* **8:40** *मुझे* - या, “मुझ मनुष्य।”

47जो परमात्मा का है, वह परमात्मा का संदेश सुनता है और उनकी
आज्ञा मानता है। तुम परमात्मा के नहीं हो, इसलिए उनका संदेश न
सुनते हो और न मानते हो।”

मृत्यु से कैसे बचें

48यहूदियों ने कहा, “क्या हमारा यह कहना ठीक नहीं कि तुम निकम्मे
समेरिया हो और तुम में अशुद्ध आत्मा है?”
49गुरु येशु ने उत्तर दिया, “मैं किसी अशुद्ध आत्मा के वश में नहीं,
क्योंकि मैं अपने पिता परमात्मा का आदर करता हूँ, पर तुम मेरा
अनादर कर रहे हो। 50मैं अपना सम्मान स्वयं नहीं करना चाहता, फिर
भी परमात्मा मुझे सम्मान देंगे। क्योंकि परमात्मा सच्चा न्याय करते हैं।
51मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, यदि कोई व्यक्ति मेरी शिक्षा का
पालन करता है, तो वह कभी नहीं मरेगा।”
52तब लोगों ने कहा, “अभी तो पक्का है कि तुममें अशुद्ध आत्मा है!
अब्राहम मर गए और सभी परमात्मा के प्रवक्ता भी। पर तुम कहते हो,
‘यदि कोई व्यक्ति मेरे मेरी शिक्षा का पालन करता है, तो वह कभी
नहीं मरेगा।’ 53हमारे पूर्वज कुलपिता अब्राहम तो मर गए। परमात्मा के
प्रवक्ता भी मर गए। क्या तुम उन लोगों से महान हो? तुम अपने आप
को समझते क्या हो?”
54गुरु येशु ने उत्तर दिया, “यदि मैं स्वयं अपना सम्मान करूँ तो इसका
कोई अर्थ नहीं। मुझे सम्मानित करने वाले मेरे पिता परमात्मा हैं जिन्हें
तुम भी अपना परमात्मा कहते हो। 55तुम उन्हें नहीं जानते, मैं उन्हें जानता
हूँ। यदि मैं यह कहता कि मैं उन्हें नहीं जानता तो मैं भी तुम्हारे समान
झूठा साबित हो जाऊँगा। मैं उन्हें जानता हूँ, इसलिए उनके आदेशों का
पालन करता हूँ। 56तुम्हारा कुलपिता अब्राहम मेरे आने का इंतजार खुशी
के साथ कर रहे थे। उन्होंने मुझे आते देखा और वह बहुत खुश हुए।”
57तब वे लोग बोले, “तुम्हारी उम्र पचास साल से भी कम होगी और
तुम बोल रहे हो कि तुम अब्राहम को देख चुके हो?”+
58गुरु येशु ने उनसे कहा, “मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, अब्राहम
के जन्म के पहले से, मैं हूँ!” 59तब लोगों ने गुरु येशु को मारने के लिए
पत्थर उठाए, परंतु वह छिपकर मंदिर के आँगन से बाहर निकल गए।

9

जन्म से अंधे मनुष्य को दृष्टिदान

[1]जाते हुए मार्ग में गुरु येशु ने एक मनुष्य को देखा जो जन्म से अंधा
था। [2]उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, “गुरुजी, किसने पाप किया, इसने या
इसके माता-पिता ने जिसके कारण यह मनुष्य अंधा पैदा हुआ?”
[3]गुरु येशु ने उत्तर दिया, “न तो इसने पाप किया और न इसके
माता-पिता ने, परंतु यह अंधा पैदा हुआ ताकि परमात्मा की योजना और
शक्ति उसमें प्रकट हो जाए। [4]जिन्होंने मुझे भेजा है उनका काम दिन बीतने
से पहले हमें+ खत्म कर लेना चाहिए। रात होने पर है, जब कोई व्यक्ति
काम नहीं कर सकता। [5]जब तक मैं संसार में हूँ, मैं संसार का प्रकाश हूँ।”
[6-7]यह कहकर गुरु येशु ने भूमि पर थूका। थूक से मिट्टी का लेप
बनाया और यह लेप अंधे की आँखों पर लगाकर कहा, “जाओ
और इसे सिलोम के तालाब में धो लो।” (सिलोम का अर्थ है, “भेजा
हुआ।”) तब अंधा आदमी चला गया। उसने अपनी आँखें धोईं और
देखता हुआ लौट गया।
[8]उसके पड़ोसी और वे लोग जो पहले उसे भीख माँगते हुए देखा करते
थे, बोले, “क्या यह वही नहीं जो बैठा हुआ भीख माँगा करता था?”
[9]कुछ ने कहा, “हाँ, वही है।”
अन्य बोले, “नहीं, पर उसके जैसा दिखता है।”
जबकि वह व्यक्ति कहता रहा, “मैं वही हूँ।”
[10]उन्होंने पूछा, “कैसे हुआ कि तुम अब देख पा रहे हो?”
[11]उसने कहा, “येशु नाम का एक व्यक्ति ने मिट्टी का लेप बनाया
और उसे मेरी दोनों आँखों पर लगाकर कहा, ‘सिलोम के कुंड पर
जाओ और अपनी आँखें धो लो।’ तो मैं वहाँ गया और आँखें धोने के
बाद, मैं देखने लगा!”
[12]उन्होंने उससे पूछा, “अच्छा, वह येशु कहाँ है?”
उसने कहा, “मैं नहीं जानता।”

फरीसियों द्वारा गुरु येशु की जाँच-पड़ताल

[13]लोग उस व्यक्ति को जो पहले अंधा था, फरीसी धार्मिक पंथ
के कुछ लोगों के पास लाए। [14]जिस दिन गुरु येशु ने मिट्टी का लेप

बनाकर अंधा व्यक्ति को देखने की शक्ति दी, वह आराम-दिवस था।
15इसलिए फरीसियों ने उससे फिर से पूछा कि वह कैसे देख पा रहा है।
उसने कहा, “प्रभु येशु ने मिट्टी का लेप मेरी आँखों पर लगाया और
मैंने मेरे आँखों को धोया। तब से मैं देखने लगा।”
16इस पर कुछ फरीसी कहने लगे, “वह मनुष्य परमात्मा की ओर से
नहीं, क्योंकि उसने आराम-दिवस के नियमों को तोड़ा है।” पर दूसरों
ने कहा, “इस प्रकार का चमत्कार एक पापी मनुष्य नहीं कर सकता!”
इस कारण उनमें मतभेद हो गया।
17तब फरीसियों ने जो पहले अंधा था, फिर से पूछा, “तुम उस मनुष्य
के बारे में क्या कहते हो जिसने तुम्हारी आँखें ठीक कर दी हैं?”
उसने कहा, “वह एक परमात्मा के प्रवक्ता हैं!”
18यहूदी धर्मगुरु इस बात पर विश्वास ही नहीं कर पा रहे थे कि
वह, जो पहले अंधा था, अब देख सकता है। इसलिए उन्होंने उसके
माता-पिता को बुलवाया 19और उनसे पूछा, “क्या यह तुम्हारा बेटा है,
जिसे तुम कहते हो कि अंधा पैदा हुआ था? अगर ऐसा है, तो यह अब
देखने कैसे लगा?”
20उसके माता-पिता ने उत्तर दिया, “हाँ, हम जानते हैं कि यही हमारा
बेटा है, और यह अंधा पैदा हुआ था। 21पर अब कैसे देखने लगा, यह
हम नहीं जानते, और न हम यह जानते हैं कि किसने इसकी आँखें
ठीक कर दीं। आप उसी से पूछिए। वह इतना छोटा भी नहीं है की
आपको सब कुछ ना बता सके।” 22उसके माता-पिता ने यह बात
इसलिए कही क्योंकि वे यहूदी धर्मगुरुओं से डरते थे। धर्मगुरुओं
ने एका कर लिया था कि यदि कोई व्यक्ति गुरु येशु को मुक्तिदाता
मानकर स्वीकार करेगा, उसको यहूदी सत्संग भवन से निकाल दिया
जाएगा। 23इसी कारण उसके माता-पिता ने कहा था, “वह बच्चा नहीं
है, उसी से पूछिए।”
24तब फरीसियों ने उसे जो पहले अंधा था दूसरी बार बुलाया और
उससे कहा, “परमात्मा की कसम खाओ और सच बोलो! क्योंकि हम
जानते हैं कि वह मनुष्य येशु पापी है।”
25उसने उत्तर दिया, “वह पापी है या नहीं, यह मैं नहीं जानता। किंतु
एक बात मैं जानता हूँ कि पहले मैं अंधा था और अब देख सकता हूँ।”

[26]फरीसियों ने पूछा, “उसने तुम्हारे साथ क्या किया? कैसे तुम्हारी
आँखें ठीक कर दीं?”
[27]उसने कहा, “मैं आपको बता चूका हूँ पर आपने सुना ही नहीं। आप
फिर क्यों सुनना चाहते हैं? क्या आप भी उनके शिष्य बनना चाहते हैं?”
[28]इस पर वे उसे गाली देकर बोले, “तू होगा उसका शिष्य, हम तो
परमात्मा के प्रवक्ता मोशे के शिष्य हैं। [29]हम जानते हैं कि परमात्मा ने
मोशे से बातें कीं, पर हम नहीं जानते कि यह व्यक्ति कहाँ से है।”
[30]उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, “हैरानी की बात है कि आप नहीं जानते
कि वह कहाँ से आए हैं, फिर भी उन्होंने मेरी आँखें ठीक कर दीं।
[31]हम जानते हैं कि परमात्मा पापियों की नहीं सुनते, परंतु यदि कोई
व्यक्ति परमात्मा का आदर-सम्मान करता हो और उनकी इच्छा के
अनुसार चलता हो, तो वह उसकी सुनते हैं। [32]इतिहास में इससे पहले
अब तक यह सुनने में नहीं आया कि किसी ने जन्म से अंधे की आँखें
ठीक की हों। [33]यदि वह परमात्मा की ओर से नहीं होते तो वह कुछ
भी नहीं कर पाते।”
[34]उन्होंने उत्तर दिया, “तू पापी है और पाप में पैदा हुआ है। तेरी
औकात क्या है कि तू हमें कुछ सिखाए?” तो धर्मगुरुओं ने उसे सत्संग
भवन से निकाल दिया।
[35]जब गुरु येशु ने सुना कि उन्होंने उस व्यक्ति को सत्संग भवन से
बाहर निकाल दिया है, तो उससे मिलने पर उन्होंने पूछा, “क्या तुम
तेजस्वी मानव-पुत्र+ पर आस्था रखते हो?”
[36]उसने पूछा, “आप बताइए, वह कौन है? उनके बारे में मुझे और
बताइए ताकि मैं उनपर आस्था रख सकूँ!”
[37]गुरु येशु ने उससे कहा, “तुमने उसे अब देख लिया है और जो तुमसे
बात कर रहा है, वह वही है!”
[38]वह भक्ति भाव से गुरु येशु+ के चरणों पर झुका और कहा, “हाँ
प्रभुजी, मेरी आप पर गहरी आस्था हो गई है!”
[39]प्रभु येशु ने कहा, “मैं संसार में न्याय करने के लिए आया हूँ कि जो
नहीं देखते, वे देखें और जो देखते हैं, वे अंधे हो जाएँ।”
[40]पास खड़े कुछ फरीसी पंथ के लोगों ने उन्हें सुनकर बोला, “क्या
तुम हमें अँधा कह रहे हो?”

41प्रभु येशु ने कहा, “यदि तुम अंधे होते तो पाप के दोषी न होते।
लेकिन तुम दोषी बने रहते हो क्योंकि तुम दावा करते हो कि तुम देख
सकते हो।”

10

मुक्ति द्वार

1प्रभु येशु ने कहा, “मैं तुम फरीसी धार्मिक पंथ के लोगों पर सच्चाई
प्रकट करता हूँ, वह जो दरवाज़े से भेड़शाला के अंदर नहीं आता किंतु
दूसरी ओर से फांदकर आता है, वह चोर और लुटेरा है। 2जो दरवाज़े से
अंदर आता है, वह भेड़ों का चरवाहा है। 3चरवाहे के लिए चौकीदार
दरवाज़ा खोल देता है। जब चरवाहा अपनी भेड़ों को भेड़शाला से
चराने के लिए बाहर ले जाने को उनका नाम ले लेकर बुलाता है तो
भेड़ें चरवाहे की आवाज़ पहचान लेती हैं। 4चरवाहा अपनी सब भेड़ों
को निकाल लेने पर वह उनके आगे-आगे चलता है और भेड़ें उसके
पीछे-पीछे चलती हैं, क्योंकि वे उसकी आवाज़ पहचानती हैं। 5वे
किसी अजनबी के पीछे नहीं जाएँगी परंतु उससे दूर भागेंगी, क्योंकि वे
अजनबी की आवाज़ नहीं पहचानतीं।”
6गुरु येशु ने यह उदाहरण उन्हें बताया परंतु वे समझ ही नहीं पाए
कि वह क्या कहना चाह रहे थे। 7इसलिए गुरु येशु ने फिर कहा, “मैं
तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, भेड़ों का द्वार मैं ही हूँ। 8जो मुझसे पहले
आए, वे सब चोर और लुटेरे थे। भेड़ों ने उनकी आवाज़ नहीं सुनी।
9द्वार मैं हूँ। जो कोई मुझसे होकर भीतर आएगा, वह मुक्ति पाएगा*
और बिना किसी डर के अंदर और बाहर आएगा-जाएगा और उसको
अच्छा भोजन मिलेगा। 10चोर केवल चुराने, हत्या करने और नष्ट करने
आता है। मैं इसलिए आया हूँ कि लोग मोक्ष का भरपूर आनंद पाएँ।
11“मैं ही वह आदर्श चरवाहा हूँ। आदर्श चरवाहा अपनी भेड़ों
के लिए अपना जीवन तक देने को तैयार रहता है। 12मज़दूर, जो न
चरवाहा है और न भेड़ों का मालिक, जब भेड़िए को आते देखता है तो
भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है। तब भेड़िया भेड़ो पर हमलाकर उनको

---

* **10:9** *वह मुक्ति पाएगा* - या, “वह सुरक्षित रहेगा”

तितर-बितर कर देता है। [13]मज़दूर भाग जाता है क्योंकि वह केवल पैसे
के लिए काम करता है और भेड़ों की चिंता नहीं करता।
[14-15]"आदर्श चरवाहा मैं हूँ। जैसे पिता परमात्मा मुझे जानते हैं और
मैं उन्हें जानता हूँ, वैसे ही मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और वे मुझे
जानती हैं। मैं अपनी भेड़ों के लिए मरने को भी तैयार हूँ।
[16]"मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस भेड़शाला में नहीं हैं। मुझे उन्हें भी
लाना है। वे भी मेरी आवाज़ सुनेंगी, और ऐसे एक ही झुण्ड और एक
ही चरवाहा होगा।
[17]"पिता परमात्मा मुझसे इसलिए प्रेम करते हैं क्योंकि मैं अपना
जीवन अर्पित करता हूँ ताकि मैं मरने के बाद ज़िन्दा हो जाऊँ। [18]कोई
मुझसे मेरा जीवन नहीं छीन सकता। मैं स्वयं अपना जीवन अर्पित
करता हूँ। मुझे अधिकार है कि मैं अपना जीवन अर्पित करूँ और मुझे
यह भी अधिकार है कि मैं मरने के बाद ज़िन्दा हो जाऊँ। यह आदेश
मुझे अपने पिता परमात्मा की ओर से मिला है।"
[19]इन बातों के कारण वहाँ पर खड़े यहूदियों में फिर मतभेद हो गया।
[20]उनमें से कुछ ने कहा, "उसमें अशुद्ध आत्मा है, और वह पागल है।
उसकी क्यों सुनते हो?"
[21]परंतु कुछ और कहने लगे, "ये बातें अशुद्ध आत्मा से जकड़े हुए
व्यक्ति की-सी नहीं हैं यह बातें उस व्यक्ति की नहीं हैं जिसमें कोई
अशुद्ध आत्मा हो। क्या अशुद्ध आत्मा अंधों की आँखें खोल सकता
है?"

भेड़ें चरवाहे की आवाज़ पहचानती हैं

[22]यह ठंड का मौसम था और मंदिर का समर्पण त्यौहार* यरूशलम
शहर में मनाया जा रहा था। [23]गुरु येशु मंदिर के आंगन के राजा शलोमो
के बरामदे नामक स्थान में टहल रहे थे। [24]यहूदी लोग गुरु येशु के चारों
ओर इकट्ठा हो गए और पूछने लगे, "आप कब तक हमें दुविधा में डाले
रहेंगे? यदि आप मुक्तिदाता हैं, तो हमसे साफ कह दीजिए।"

10:16 यहेजकेल 34:23 * **10:22** *मंदिर का समर्पण त्यौहार* - यह समर्पण त्यौहार यहूदी भाषा में "हनुका" कहलाता है। यह त्यौहार सन् 164 बी.सी.ई. में यहूदी मंदिर के पुनःसमर्पण को याद करते हुए प्रारंभ किया गया था जिसे प्रति वर्ष मनाया जाता है।

[25]गुरु येशु ने उत्तर दिया, “मैं तुम लोगों से कह चुका हूँ, पर तुम
विश्वास करते ही नहीं। जो काम मैं अपने पिता परमात्मा के नाम
से करता हूँ, वे मेरे बारे में बताते हैं। [26]पर तुम विश्वास नहीं करते,
क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो।+ [27]मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती
हैं। मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे चलती हैं। [28]मैं उन्हें मोक्ष देता
हूँ और वे कभी नाश न होंगे। उन्हें मेरे हाथ से कोई कभी छीन नहीं
सकता। [29]मेरे पिता परमात्मा जिन्होंने उनको मुझे दिया है वह सबसे
महान हैं, और उन्हें मेरे पिता परमात्मा के हाथ से कोई नहीं छीन
सकता। [30]मैं और मेरे पिता परमात्मा एक हैं।”
[31]तब उन लोगों ने गुरु येशु को जान से मारने के लिए दोबारा पत्थर
उठाए। [32]गुरु येशु ने उनसे पूछा, “पिता परमात्मा की ओर से मैंने
अनेक अच्छे काम तुम्हें दिखाए। उनमें से किस काम के लिए तुम मुझे
जान से मारना चाह रहे हो?”
[33]तब वे लोग कहने लगे, “अच्छे कामों के लिए हम तुम्हें नहीं मारना
चाहते। पर तुम एक इंसान होते हुए स्वयं को परमात्मा घोषित करते
हो होने ऐसा करके तुम घोर पाप कर रहे हो।”
[34]गुरु येशु ने कहा, “क्या तुम्हारे ग्रंथ में यह नहीं लिखा है, ‘परमात्मा
ने शासकों से कहा, “तुम ईश्वर हो”’?* [35]जो परमात्मा-ग्रंथ में लिखा
है, टल नहीं सकता। यदि परमात्मा ने उनको ‘ईश्वर’ कहा जिनके लिए
परमात्मा का संदेश कहा गया, [36]तो जब मैं कहता हूँ, ‘मैं परमात्मा का
पुत्र हूँ,’ तो तुम इसे परमात्मा की निंदा करना क्यों कहते हो? आखिर
पिता परमात्मा ने ही तो मुझे नियुक्त करके संसार में भेजा है। [37]यदि
मैं अपने पिता परमात्मा के काम नहीं कर रहा हूँ, तो मुझ पर विश्वास
मत करो। [38]परंतु यदि मैं मेरे पिता परमात्मा के काम कर रहा हूँ, तो तुम
लोगों को मुझ पर विश्वास करना चाहिए। यदि तुम मुझ पर विश्वास

---

* **10:34** *तुम ईश्वर हो* - यह संदर्भ भजन शास्त्र 82:6 में पाया जाता है, जिसके दो मत हैं। पहला यह है कि स्वर्ग में दिव्य परिषद के शासकों को संदर्भित करता है जो अदृश्य लोकों पर अन्यायपूर्ण शासन करते हैं। दूसरा मत यह है कि मानवीय शासकों को संदर्भित करता है जिनके पास दिव्य अधिकार था, लेकिन वे उस अधिकार का दुरुपयोग कर रहे थे। दोनों ही मतों में, ये “ईश्वर” अन्यायपूर्ण शासन कर रहे थे और मनुष्यों के साथ क्रूरता कर रहे थे। इसके विपरीत, प्रभु येशु “ईश्वर” होने का दावा नहीं कर रहे हैं, बल्कि यह दावा कर रहे हैं कि परमात्मा ने उन्हें अपने पवित्र पुत्र के रूप में भेजा है।

नहीं करते हो, तो कम-से-कम मेरे कामों पर विश्वास करो ताकि तुम
जान+ सको कि पिता परमात्मा मुझमें हैं और मैं पिता परमात्मा में।"
39तब फिर से उन्होंने गुरु येशु को गिरफ्तार करने की कोशिश की,
परंतु वह उनके हाथ से निकल गए।
40उसके बाद गुरु येशु फिर यरदन नदी के पास उस स्थान पर चले
गए जहाँ योहन पहले समर्पण-स्नान दिया करते थे। गुरु येशु वहीं रहे
और 41बहुत लोग उनके पास आकर एक दूसरे से कहने लगे, "योहन
ने हमें कोई चमत्कार नहीं दिखाया, परंतु जो कुछ योहन ने गुरु येशु के
बारे में कहा था, वह सब सच था।" 42और वहाँ बहुत लोगों ने गुरु येशु
पर आस्था प्रकट की।

11

गुरु येशु के मित्र लाज़रस की मृत्यु

1लाज़रस नामक एक मनुष्य बीमार था। वह अपनी दो बहनों मरियम
तथा मार्था के साथ बैथनिया गाँव में रहता था। 2यह वही मरियम थी
जिसने प्रभु येशु के चरणों पर खुशबूदार तेल लगाया था और उनके
चरणों को अपने बालों से पोंछा था। इसी का भाई लाज़रस बीमार था।
3दोनों बहनों ने गुरु येशु को खबर भेजी, "हे प्रभु, आपका प्रिय मित्र
बीमार है।"
4गुरु येशु यह सुनकर बोले, "लाज़रस की बीमारी का अंत मृत्यु
नहीं है। इस बीमारी से परमात्मा का गुणगान होगा और इसके द्वारा
परमात्मा के पुत्र को तेज प्राप्त होगा।" 5हालाँकि गुरु येशु मार्था तथा
उसकी बहन और लाज़रस से प्रेम करते थे, 6जब उन्होंने सुना कि
लाज़रस बीमार है, फिर भी और दो दिन वहीं ठहरे रहे जहाँ वह थे।
7इसके बाद गुरु येशु ने अपने शिष्यों से कहा, "आओ, हम फिर
यहूदिया प्रदेश चलें।"
8शिष्य बोले, "गुरुजी, कुछ समय पहले यरूशलम शहर के यहूदी
लोग पथराव करके आपको मार डालना चाहते थे। फिर भी आप वहीं
जा रहे हैं?"
9गुरु येशु ने उत्तर दिया, "क्या दिन के बारह घंटे रोशनी नहीं होती?
यदि कोई दिन में चले तो रोशनी होने के कारण ठोकर नहीं खाता।

[10]परंतु यदि कोई रात में चले तो ठोकर खाता है, क्योंकि उसमें रोशनी नहीं।"

[11]इसके बाद गुरु येशु ने उनसे कहा, "हमारा मित्र लाज़रस सो गया है। मैं उसे जगाने जाता हूँ।"

[12]शिष्यों ने कहा, "प्रभु, यदि वह सो गया है तो ठीक हो जाएगा।" [13]यह गुरु येशु ने उसकी मृत्यु के बारे में कहा था, परंतु शिष्य समझे कि वह नींद के बारे में कह रहे हैं।

[14]तब गुरु येशु ने उनसे साफ शब्दों में कहा, "लाज़रस मर गया है। [15]और तुम्हारे लिए यह अच्छा हुआ कि मैं वहाँ नहीं था। अब जो तुम देखोगे उससे तुम्हारा विश्वास मुझमें और बढ़ेगा। आओ, हम उसके पास चलें।"

[16]थोमस, जो जुडवाँ भी कहलाता था, उसने अपने साथी शिष्यों से कहा, "आओ, हम भी गुरुजी के साथ मरने चलें।"

गुरु येशु ने लाज़रस को ज़िन्दा कर दिया

[17]गुरु येशु को बैथनिया गाँव पहुँचने पर पता चला कि लाज़रस के शव को गुफा में रखे चार दिन हो चुके हैं। [18]बैथनिया यरूशलम शहर के नज़दीक था, लगभग तीन किलोमीटर दूर। [19]अनेक यहूदी लोग मार्था और मरियम के पास उनके भाई की मृत्यु पर उन्हें तसल्ली देने आए थे। [20]ज्योंही मार्था ने सुना कि गुरु येशु आ रहे हैं वह उनसे मिलने निकल गई, पर मरियम घर में ही बैठी रही। [21]मार्था ने गुरु येशु से कहा, "प्रभु, यदि आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता। [22]किंतु अब भी मैं जानती हूँ कि आप जो कुछ परमात्मा से माँगेंगे, वह आपको देंगे।"

[23]गुरु येशु ने उससे कहा, "तुम्हारा भाई फिर ज़िन्दा होगा।"

[24]उस पर मार्था बोली, "मैं जानती हूँ कि वह जीवित हो जाएगा जब सब मरे हुए लोग अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के दिन जीवित किए जाएँगे।"

[25]गुरु येशु ने कहा, "मरे हुआ को ज़िन्दा करनेवाला और मोक्ष देने वाला मैं हूँ। जो कोई मुझ पर आस्था रखता है, यदि वह मर भी जाए तो भी ज़िन्दा होगा। [26]और जिसने भी मुझ पर आस्था रखकर मोक्ष पाया है, वह हमेशा तक मृत नहीं रहेगा। क्या तुम इस पर विश्वास करती हो?"

[27]उसने कहा, “हाँ प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ कि आप मुक्तिदाता
और परमात्मा के पुत्र हैं जो संसार में आने वाले थे।”
[28]इतना कहकर वह चली गई और अपनी बहन मरियम को अलग ले
जाकर उससे बोली, “गुरुजी यहीं हैं और तुम्हें बुला रहे हैं।”
[29]यह सुनते ही मरियम तुरंत उठी और गुरु येशु के पास आई।
[30]गुरु येशु अभी गाँव में नहीं पहुँचे थे, परंतु उसी जगह पर थे जहाँ मार्था
उनसे मिली थी। [31]जब उन लोगों ने जो मरियम को तसल्ली देने आए थे यह
देखा कि वह तुरंत उठी और घर से बाहर निकली है, तो वे उसके पीछे-पीछे
गए, क्योंकि वे समझे कि वह लाज़रस के शव के पास रोने जा रही है।
[32]जब मरियम वहाँ पहुंची जहाँ गुरु येशु थे। उनको देखते ही, मरियम
उनके चरणों पर गिर पड़ी और बोली, “प्रभु, यदि आप यहाँ होते तो
मेरा भाई नहीं मरता।”
[33]जब गुरु येशु ने उसे और उसके साथ यहूदी लोगों को रोते हुए देखा
तब उनका दिल दुखी हुआ और उन्होंने दर्द भरी आवाज़ में उनसे पूछा,
[34]“तुमने उसको कहाँ रखा है?”
उन्होंने कहा, “प्रभु, आइए और देखिए।”
[35]तब गुरु येशु रो पड़े।
[36]यह देखकर लोग कहने लगे “देखो, वह उसे कितना प्रेम करते थे।”
[37]परंतु उनमें से कुछ और ने कहा, “यह वही हैं, जिन्होंने अंधे की
आँखें खोल दीं। क्या वह लाज़रस को मौत से बचा नहीं सकते थे?”

लाज़रस को जीवनदान

[38]गुरु येशु अभी भी बहुत दुखी* थे और वह शव रखने वाली गुफा
पर आए। वह उस पत्थर के पास आए जिससे गुफा का मुख बंद था।
[39]गुरु येशु ने कहा, “यह पत्थर हटाओ।”
मृत लाज़रस की बहन मार्था बोली, “प्रभु, अब उसमें से बदबू आ
रही होगी, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो चुके हैं।”
[40]किंतु गुरु येशु ने उससे कहा, “क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि
यदि तुम आस्था रखोगी तो परमात्मा के तेज को देखोगे?”

---

* **11:38** *बहुत दुखी* - या, “गुस्सा”

41तब लोगों ने पत्थर को हटा दिया। गुरु येशु ने आँखें ऊपर उठाईं
और कहा, “हे पिता परमात्मा, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने
मेरी प्रार्थना सुन ली है। 42मैं जानता हूँ कि आप हमेशा मेरी प्रार्थना
सुनते हैं, पर चारों ओर खड़े लोगों के कारण मैंने यह कहा था जिससे
वे विश्वास करें कि आपने मुझे भेजा है।” 43यह कहकर गुरु येशु ने
ऊँची आवाज़ से पुकारा, “लाज़रस, बाहर निकल आ!” 44तब लाज़रस
जो मर गया था ज़िन्दा बाहर निकल आया। उसके हाथ-पैर पट्टियों से
लिपटे हुए थे और उसका मुँह कपड़े से लिपटा हुआ था। प्रभु येशु ने
लोगों से कहा, “इसे खोल दो और जाने दो।”

गुरु येशु की हत्या का षडयंत्र

45यह सब देखकर मरियम के पास दुख प्रकट करने आए बहुत से
यहूदी लोगों ने गुरु येशु पर आस्था प्रकट की, 46पर कुछ ने फरीसी
पंथ के लोगों को जाकर बता दिया कि गुरु येशु ने कैसा अद्‌भुत
काम किया है। 47इस पर प्रधान पुरोहितों और फरीसियों ने यहूदी
धर्म-महासभा के सदस्यों को इकट्ठा कर कहा, “हमें क्या करना
चाहिए? यह व्यक्ति तो बहुत से चमत्कारी काम कर रहा है। 48यदि
हम इसे यों ही छोड़ देंगे तो सब लोग इस पर आस्था रखने लगेंगे और
रोम शासक हमारे विरुद्ध कार्यवाई करके हमारे मंदिर और हमारे लोगों
दोनों को नष्ट कर देंगे।”

49तब काइफस जो उस साल महापुरोहित के पद पर था, बोला,
“आप कुछ जानते तो हैं नहीं। 50तुम यह नहीं समझते कि तुम्हारे लिए
यह भला+ है कि एक हम लोगों के लिए एक व्यक्ति मर जाए ताकि
हमारे मंदिर और लोग रोमन शासकों का कहर से बच जाएँ।”

51यह बात उसने अपनी ओर से नहीं कही, परंतु उस साल का
महापुरोहित होने के कारण भविष्यवाणी की थी कि गुरु येशु यहूदी
लोगों के लिए मरेंगे, 52और न केवल यहूदी लोगों के लिए, परंतु वह पूरे
संसार में परमात्मा के बिखरे हुए लोगों को इकट्ठा करके उन सब को
एक करेंगे।

53तो यहूदी धर्मगुरुओं ने उस दिन से गुरु येशु को मार डालने की
योजना बनाने लगे। 54इस कारण उस समय से गुरु येशु ने यहूदियों के

बीच खुले रूप से घूमना बंद कर दिया। वह इफ्राईम गाँव चले गए जो सुनसान जगह के नज़दीक था और अपने शिष्यों के साथ वहीं रहने लगे।

55यहूदियों का मुक्ति-त्यौहार नज़दीक था और अनेक गाँवों से बहुत लोग यरूशलम शहर में आए थे कि अपने आप को यहूदी रीति के अनुसार शुद्ध करें। 56वे गुरु येशु की खोज में थे और मंदिर के आँगन में खड़े हुए आपस में पूछ रहे थे, "तुम्हारा क्या विचार है? क्या वह त्यौहार पर नहीं आएँगे?" 57उधर प्रधान पुरोहितों और फरीसियों ने आदेश दे रखा था कि यदि किसी को यह पता चले कि गुरु येशु कहाँ हैं, तो वह व्यक्ति उन्हें सूचना दे जिससे वे उन को गिरफ्तार कर सकें।

12

बहुमूल्य भक्ति

1तब मुक्ति-त्यौहार के छः दिन पहले गुरु येशु बैथनिया गाँव में आए, जहाँ लाज़रस रहता था जिसे गुरु येशु ने मरे हुओं में से ज़िन्दा किया था। 2वहाँ गुरु येशु के सम्मान में भोज तैयार किया गया था। मार्था भोजन परोस रही थी और गुरु येशु के साथ भोजन करने वालों में लाज़रस भी शामिल था। 3तब मरियम ने बहुमूल्य शुद्ध जटामांसी जड़ी-बूटी का लगभग तीन सौ ग्राम खुशबूदार तेल* लिया और उसको गुरु येशु के चरणों पर मला और उनके चरणों को अपने बालों से पोंछने लगी। उस तेल की खुशबू से सारा घर महक उठा। 4इस पर गुरु येशु का एक शिष्य, यहूदा इस्करियोत जो उनसे विश्वासघात करने वाला था, बोला, 5"यह खुशबूदार तेल का चाँदी के तीन सौ सिक्कों की किमत जितना था! इसे बेचकर पैसा गरीबों को दिया जाना चाहिए था। 6यहूदा ने यह बात इसलिए नहीं कही थी कि उसे गरीबों की चिंता थी, परंतु वह चोर था। उसके पास दान के पैसों की थैली रहती थी और जो कुछ दान उसमें डाला जाता था वह उस में से कुछ चुरा लेता था।"

---

* **12:3** *खुशबूदार तेल* - यह बहुमूल्य खुशबूदार तेल केवल उत्तर भारत में पाया जाता था और बहुत महँगा होता था क्योंकि इसको लाने के लिए भारत की बहुत लंबी यात्रा करनी पड़ती थी (ग्रंथ के पीछे "इज़राएल और भारत के बीच व्यापार मार्ग" का नक्शा देखें)।

7गुरु येशु ने कहा, “मरियम को ऐसा करने से मत रोको। उसने यह मेरे
अंतिम संस्कार की तैयारी के लिए किया है। 8गरीब तो हमेशा तुम्हारे
साथ रहेंगे, पर मैं तुम्हारे साथ हमेशा नहीं रहूँगा।”
9बहुत से यहूदिया प्रदेश के लोगों को पता चला कि गुरु येशु वहाँ हैं,
इसलिए लोग केवल उन्हीं को देखने नहीं, परंतु लाज़रस को भी देखने
आए जिसे गुरु येशु ने मरे हुओं में से ज़िन्दा किया था। 10जब प्रधान
पुरोहितों ने यह देखा तो उन्होंने लाज़रस को भी मारने की योजना
बनाई, 11क्योंकि लाज़रस के कारण अनेक यहूदी अपने धर्मगुरुओं को
छोड़कर गुरु येशु पर आस्था रखने लगे थे।

राजा येशु का स्वागत

12अगले दिन, मुक्ति-त्यौहार मनाने आई बड़ी भीड़ ने सुना कि गुरु
येशु यरूशलम शहर आ रहे हैं। 13लोगों ने खजूर के पेड़ की शाखाएँ लीं
और वे गुरु येशु से मिलने निकले। वे ऊँची आवाज़ में कह रहे थे,

“जय हो!
प्रभु परमात्मा के नाम से आने वाले को आशीर्वाद मिले!
इज़राएल के महाराजा को आशीर्वाद मिले!”

14गुरु येशु को एक गधे का बच्चा मिला और उस पर वह बैठ गए,
जैसा परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है,

15 “ओ यरूशलम शहर के लोगो, डरो मत!
देखो, तुम्हारा राजा गधे पर बैठा आ रहा है!”

16उनके शिष्य पहले तो यह नहीं समझे कि प्रभु येशु ने ऐसा क्यों
किया, परंतु जब प्रभु येशु पूरे तेज में आए, तब शिष्यों को ये सब
याद आया कि सब कुछ ठीक वैसा ही हुआ जैसा परमात्मा-ग्रंथ में
भविष्यवाणी लिखी हुई है।
17जो लोग उस समय गुरु येशु के साथ थे, उन लोगों ने यह बात
सबको बताई कि गुरु येशु ने लाज़रस को शव रखने वाली गुफा से
बाहर बुलाकर ज़िन्दा किया है। 18तो बहुत लोग गुरु येशु से इस कारण
मिलने गए, क्योंकि उन्होंने सुना था कि गुरु येशु ने यह चमत्कार किया

12:13 भजन शास्त्र 118:25-26 **12:15** जकरयाह 9:9

था। [19]इस पर फरीसियों ने आपस में यह बात की, “हमारी योजना पर
पानी फिर गया! सारा संसार उसके पीछे हो लिया है।”

गुरु येशु से विदेशी लोगों की विनती

[20]जो लोग मुक्ति-त्यौहार पर भक्ति करने आए थे उनमें से कुछ ग्रीस
देश के निवासी थे। [21]वे गुरु येशु के शिष्य फिलिपस के पास गए, जो
गलील प्रदेश के बैथसैदा नगर का रहने वाला था। उन्होंने उससे कहा,
“भाई साहब, हम गुरु येशु से मिलना चाहते हैं।”
[22]फिलिपस ने जाकर एक अन्य शिष्य अंदरियास से यह बात कही
और दोनों ने जाकर गुरु येशु से। [23]गुरु येशु ने उनसे कहा, “मानव-पुत्र
का तेज प्रकट करने का वक्त आ गया है। [24]मैं तुम पर सच्चाई प्रकट
करता हूँ, जब तक गेहूँ का एक दाना बोया नहीं जाता तब तक वह
अकेला दिखाई देता है। पर ज़मीन में बोने के बाद मर जाता है और
एक नए जीवन के रूप वह अंकुरित होता है और वह एक दाना बहुत
से जीवन और फल लाता है। [25]जो कोई भी इस संसार में केवल अपने
ही जीवन के बारे में सोचता है, वह अपना जीवन खो देगा। पर जो इस
संसार में अपने स्वार्थी जीवन से नफरत करता है, वह मोक्ष पाता है।
[26]यदि कोई मेरी सेवा करना चाहे तो उसे मेरा शिष्य बनना होगा। जहाँ
मैं हूँ, वहाँ मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करे तो मेरे पिता
परमात्मा उसका सम्मान करेंगे।
[27]“अब मेरा मन परेशान है। मैं क्या कहूँ, ‘हे पिता परमात्मा, इस
कठिन समय से मुझे बचा लीजिए?’ नहीं। मैं इसी कारण से तो आया
हूँ। [28]हे पिता परमात्मा, अपने नाम का तेज प्रकट कीजिए।”
तब परमस्वर्ग से यह आवाज़ सुनाई दी, “मैंने अपने नाम का तेज
प्रकट किया है और फिर करूँगा।” [29]पास खड़े हुए लोगों ने यह
आवाज़ सुनी तो कुछ ने कहा, “बादल गरजा” और कुछ ने कहा,
“एक स्वर्गदूत उनसे बोला है।”
[30]तब गुरु येशु ने उन्हें बताया, “यह आवाज़ मेरे लिए नहीं, तुम्हारे
लिए है। [31]अब इस संसार के न्याय का समय आ गया होता है और
इस संसार का शासक शैतान की शक्ति छिन ली जाएगी। [32]मैं, जब
पृथ्वी से ऊँचा उठाया जाऊँगा तो सब लोगों को अपने पास आने की

शक्ति दूँगा।” 33गुरु येशु ने यह कहकर संकेत कर दिया कि उनकी
मृत्यु किस प्रकार होगी।
34लोग बोले, “हमने परमात्मा-ग्रंथ से यह समझा है कि मुक्तिदाता
कभी नहीं मरेंगे। फिर आप कैसे कहते हैं कि तेजस्वी मानव-पुत्र की
मृत्यु होनी ज़रूरी है? यह तेजस्वी मानव-पुत्र कौन है?”
35गुरु येशु ने उत्तर दिया, “मेरा प्रकाश कुछ ही समय तक तुम्हारे
साथ है। जब तक मेरा प्रकाश तुम्हारे साथ है चलते रहो, ऐसा न हो
कि अंधकार तुम्हें आ घेरे। जो अंधकार में चलता है वह नहीं जानता
कि किधर जा रहा है। 36जब तक प्रकाश तुम्हारे साथ है, प्रकाश पर
आस्था रखो तो परमात्मा का प्रकाश तुम पर चमकेगा।”
ये कहकर गुरु येशु कुछ समय के लिए एकांत जगह में चले गए।

अपने लोगों द्वारा तिरस्कार

37हालाँकि गुरु येशु के बहुत से चमत्कार उन्होंने अपनी आँखों से देखे
तो भी लोगों ने इस को स्वीकार नहीं किया की परमात्मा ने उनको
भेजा है। 38उन लोगों के इस व्यवहार से परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह
का यह भविष्यवाणी पूरी होती है,

“हे प्रभु परमात्मा, हमारे संदेश पर किसने विश्वास किया?
प्रभु का बाहु-बल किस पर प्रकट हुआ?”

39वे विश्वास नहीं कर सके, क्योंकि परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह ने
यह भी कहा,

40 “उसने उनकी आँखें अंधी कर दीं
और उनका मन कठोर कर दिया है
कहीं ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें, मन से समझें
और पाप करना छोड़ दें कि मैं उनको स्वस्थ कर दूँ।”

41परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह ने यह कहा क्योंकि+ उन्होंने स्वयं
प्रभु का तेज देखा और उनके बारे में वर्णन किया। 42फिर भी अनेक
लोगों ने प्रभु येशु पर आस्था प्रकट की और उनमें से कुछ यहूदी
अधिकारी भी थे। परंतु फरीसियों के डर के कारण उन्होंने दूसरों

12:38 यशायाह 53:1 **12:40** यशायाह 6:10

के सामने यह स्वीकार नहीं किया कि कहीं ऐसा न हो कि वे यहूदी
सत्संग भवन से निकाल दिए जाएँ। 43उन्हें परमात्मा से प्राप्त सम्मान के
मुकाबले मनुष्यों से प्राप्त सम्मान अधिक पसंद आया।

शिक्षा का सारांश

44गुरु येशु ने ऊँची आवाज़ से कहा, "जो मुझ पर आस्था रखता है,
वह केवल मुझ पर नहीं, परंतु मेरे भेजने वाले परमात्मा पर आस्था
रखता है। 45जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजने वाले परमात्मा को देखता
है। 46मैं संसार में प्रकाश बनकर आया हूँ जो कोई मुझ पर आस्था रखे,
वह अंधकार में नहीं रहेगा।
47"यदि कोई मेरी शिक्षा को सुनता है और उसका पालन नहीं करता
है तो मैं उस पर दोष नहीं लगाता, क्योंकि मैं संसार के लोगों पर दोष
लगाने नहीं, परंतु उनको मुक्ति देने आया हूँ। 48परंतु जो लोग मुझे और
मेरी शिक्षा को अस्वीकार करते हैं, अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय
के दिन उनका इन्साफ मेरे द्वारा बोले गए सत्य के आधार पर किया
जाएगा। 49मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा, परंतु पिता परमात्मा ने,
जिन्होंने मुझे भेजा है, आदेश दिया है कि मैं क्या कहूँ और क्या ना
कहूँ। 50और मैं जानता हूँ कि पिता परमात्मा की आज्ञाएँ मोक्ष की ओर
ले जाती हैं। इसलिए जो कुछ मैं कहता हूँ, वैसा ही कहता हूँ जैसा
पिता परमात्मा ने मुझे कहने की आज्ञा दी है।"

13

गुरु येशु ने शिष्यों के पांव धोये

1मुक्ति-त्यौहार से पहले गुरु येशु ने यह जान लिया कि वह समय
आ पहुँचा है जब उन्हें इस संसार को छोड़कर पिता परमात्मा के पास
जाना है। गुरु येशु अपने शिष्यों से इस संसार में जैसा प्रेम रखते थे वैसे
ही अंत तक प्रेम रखते रहे। 2वह अपने शिष्यों के साथ भोजन कर
रहे थे। इस से पहले शैतान शिमोन के पुत्र यहूदा इस्करियोत के मन
में यह विचार डाल चुका था कि वह गुरु येशु से विश्वासघात करे।
3गुरु येशु यह जानते थे कि पिता परमात्मा ने सारा अधिकार उनके
हाथ में दे दिया है और यह कि वह परमात्मा के पास से आए थे और

अब परमात्मा के पास जा रहे हैं। 4वह भोजन से उठे और उन्होंने अपने
बाहरी कपड़े उतारे और अपनी कमर में अँगोछा बाँध लिया। 5तब एक
बर्तन में पानी भरकर वह अपने शिष्यों के पांव धोने और कमर में बँधे
अँगोछे से पोंछने लगे।
6गुरु येशु शिष्य शिमोन पतरस के पास आए तब पतरस बोला,
"प्रभुजी, क्या आप मेरे भी पांव धोएँगे?"
7प्रभु येशु ने उत्तर दिया, "जो मैं कर रहा हूँ, उसे तुम अभी नहीं
समझते, पर बाद में समझोगे।"
8पतरस ने कहा, "आप मेरे पैर कभी नहीं धोने पाएँगे!"
गुरु येशु ने उत्तर दिया, "यदि तुम मुझे ऐसा नहीं करने दोगे, तो मेरा
तुम्हारे साथ कोई सम्बन्ध नहीं।"
9पतरस बोला, "तब तो प्रभुजी, मेरे पांव ही नहीं, बल्कि हाथ और
सिर भी धो दीजिए!"
10प्रभु येशु ने कहा, "जो नहा चुका है, उसे पैर के अलावा और कुछ
धोने की ज़रूरत नहीं। और मेरे शिष्यों, तुम में से एक को छोड़ कर
तुम सब के मन साफ हैं।" 11प्रभु येशु जानते थे कि कौन उनके साथ
विश्वासघात कर रहा है। इस कारण उन्होंने कहा, "तुम में से एक को
छोड़ बाकि सब के मन साफ है।"
12गुरु येशु उन सबके पांव धोने के बाद अपने बाहरी कपड़े पहनकर
फिर से मेज़ के पास आया बैठ गए और बोले, "क्या तुम्हें समझ आया
कि मैंने तुम्हारे साथ ऐसा क्यों किया है? 13तुम मुझे 'गुरु' और 'प्रभु'
कहते हो, और यह सही है क्योंकि मैं वही हूँ। 14जब मैं तुम्हारा प्रभु
और गुरु होकर तुम्हारे पांव धोए हैं, इस प्रकार तुम्हें भी एक-दूसरे के
पांव धोना चाहिए। 15मैंने तुम्हारे सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया है, तो
तुम भी ऐसा ही करो। 16मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, सेवक अपने
मालिक से बड़ा नहीं होता और न भेजा हुआ अपने भेजने वाले से।
17यदि तुम यह जानते हो और इसका पालन करते हो तो परमात्मा तुम्हें
आशीर्वाद देंगे।
18"मैं तुम सबके बारे में नहीं बोल रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि किन
व्यक्तियों को मैंने चुना है। क्योंकि परमात्मा-ग्रंथ में लिखा हुआ यह
वचन पूरा होना है, 'जो मेरे साथ खाना खाता है, उसी ने मेरी पीठ में

छुरा भोंका है।' [19]इस घटना के घटने से पहले मैं तुम्हें बता रहा हूँ ताकि
जब यह हो, तब तुम विश्वास करोगे कि मैं वही हूँ जिसे परमात्मा
ने भेजा है। [20]मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, जो मेरे द्वारा भेजे गए
व्यक्ति को स्वीकार करता है, वह मुझे स्वीकार करता है। और जो
मुझे स्वीकार करता है, वह मेरे भेजने वाले परमात्मा को स्वीकार
करता है।"

कैसे एक शिष्य ने अपने गुरु को धोखा दिया

[21]यह कहते-कहते गुरु येशु का मन दुख से भर गया। उन्होंने कहा,
"मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, तुममें से एक व्यक्ति मुझे धोखा
देगा।"

[22]यह सुनकर शिष्य सोच में पड़ गए और एक-दूसरे की ओर देखने
लगे कि गुरु येशु ने यह किसके बारे में कहा है। [23]वह शिष्य, जो गुरु
येशु का प्रिय था, उनकी बगल में बैठा था। [24]शिमोन पतरस ने इशारा
करके उस शिष्य से कहा, "गुरु येशु से पूछो कि वह किसके बारे में
कह रहे हैं।" [25]तब उस शिष्य ने गुरु येशु की ओर झुककर पूछा, "प्रभु,
कौन आपसे विश्वासघात करेगा?"

[26]गुरु येशु ने उत्तर दिया, "यह वही है जिसको मैं रोटी का टुकड़ा
कटोरी में डुबाकर खाने को दूँगा।"

उन्होंने रोटी का टुकड़ा कटोरी में डुबाया और उसे शिमोन
इस्करियोत के पुत्र यहूदा को दिया। [27]रोटी का टुकड़ा लेते ही शैतान
उसमें समा गया।*

तब गुरु येशु उससे बोले, "जो कुछ तुम्हें करना है, जल्दी करो।"
[28]यह बात भोजन कर रहे शिष्य नहीं समझ पाए कि गुरु येशु ने यहूदा
से यह क्यों कहा। [29]कुछ ने सोचा कि यहूदा के पास पैसों की थैली
रहती है, इसलिए गुरु येशु कह रहे हैं कि जो कुछ उन्हें त्यौहार के लिए
चाहिए वह खरीदकर ले आए, या गरीबों को कुछ दान दे दे। [30]यह रात
का समय था और यहूदा इस्करियोत तुरंत बाहर चला गया।

13:18 भजन शास्त्र 41:9 * **13:27** *शैतान उसमें समा गया* - यहूदा ने अब प्रभु येशु को पूरी तरह से
त्याग दिया था और उसने खुद को शैतान के हाथों में सौंप दिया था।

नया आदेश

31जब यहूदा बाहर चला गया तो गुरु येशु बोले, “अब मानव-पुत्र
का तेज प्रकट हुआ और उससे परमात्मा का तेज प्रकट हुआ। 32यदि
उसके द्वारा परमात्मा का तेज प्रकट हुआ है,+ तो परमात्मा भी तेजस्वी
मानव-पुत्र में अपना तेज जल्दी ही प्रकट करेंगे।
33“मेरे प्यारे बच्चों, बस थोड़ी देर तक ही मैं तुम्हारे साथ हूँ। जैसा मैंने
यहूदी धर्मगुरुओं से कहा वैसा ही अब तुमसे कहता हूँ, ‘तुम मुझे ढूँढ़ोगे
पर जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।’ 34मैं तुम्हें एक नया
आदेश देता हूँ, एक-दूसरे से प्रेम करो। जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया है, वैसे
ही तुम भी एक-दूसरे से प्रेम करो। 35यदि तुम एक-दूसरे से प्रेम करोगे
तो इसी से सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो।”

शिष्य पतरस के विश्वासघात का संकेत

36शिमोन पतरस ने प्रभु येशु से पूछा, “प्रभु, आप कहाँ जा रहे हैं?”
प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ अभी तुम मेरे साथ
नहीं आ सकते। पर बाद में, तुम आ सकते हो।”
37पतरस ने कहा, “प्रभु, अभी मैं आपके साथ क्यों नहीं आ सकता?
मैं आपके लिए अपनी जान भी दे सकता हूँ।”
38प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “क्या तुम मेरे लिए सच में अपनी जान दे
सकते हो? मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ कि मुरगे के बांग देने से
पहिले, तुम तीन बार मेरा इन्कार करोगे, और कहोगे कि तुम मुझे नहीं
जानते।”

14

परमात्मा के पास जाने का मार्ग प्रभु येशु के पास

प्रभु येशु ने अपने शिष्यों से कहा, 1अपना मन भारी मत करो “परेशान
मत हो। पिता परमात्मा पर आस्था रखो और मुझ पर भी आस्था
रखो। 2मेरे पिता परमात्मा के घर में * बहुत से रहने के स्थान हैं। यदि
न होते तो मैं तुमसे कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए स्थान तैयार करने

---

* **14:2** *मेरे पिता परमात्मा के घर में* - अर्थात्, “परमस्वर्ग में”

जा रहा हूँ। [3]जब सबकुछ तैयार हो जाएगा, तब मैं फिर वापस आऊँगा
और तुमको अपने साथ ले जाऊँगा, ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी रहो।
[4]और तुम उस मार्ग को जानते हो जिस जगह मैं जा रहा हूँ।"+
[5]शिष्य थोमस ने प्रभु येशु से कहा, "हे प्रभु, हम नहीं जानते कि आप
कहाँ जा रहे हैं, तो फिर मार्ग कैसे जानेंगे?"
[6]गुरु येशु ने कहा, "मैं ही मार्ग हूँ, मैं ही सत्य हूँ और मैं ही मोक्ष हूँ।
मेरे बिना कोई पिता परमात्मा के पास नहीं आ सकता। [7]यदि तुम
वास्तव में मुझे जानते तो मेरे पिता परमात्मा को भी जानते। अब से तुम
उन्हें जानते हो और तुमने उनका दर्शन भी कर लिया है।"
[8]शिष्य फिलिपस ने कहा, "प्रभु, हमें पिता परमात्मा का दर्शन
कराइए, इतने से ही हम संतुष्ट हो जाएँगे।"
[9]गुरु येशु ने कहा, "फिलिपस, मैं इतने समय तुम्हारे साथ रहा, फिर
भी तुम अब तक मुझे नहीं जानते? जिसने मुझे देखा है, उसने पिता
परमात्मा दर्शन कर लिया है। फिर तुम कैसे कहते हो, 'हमें पिता
परमात्मा के दर्शन कराइए?' [10]क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं
पिता परमात्मा में हूँ और पिता परमात्मा मुझमें हैं? जो संदेश मैं तुम्हें
देता हूँ, उसे अपनी ओर से नहीं देता, परंतु मुझमें निवास करने वाले
पिता परमात्मा मेरे द्वारा अपने कार्य कर रहे हैं। [11]मेरा विश्वास करो
कि मैं पिता परमात्मा में हूँ और पिता परमात्मा मुझमें हैं। नहीं तो इन
चमत्कारी कामों के कारण ही विश्वास करो।
[12]"मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, जो मुझ में आस्था रखता है, वह
वही काम करेगा जिन्हें मैं कर रहा हूँ, और इनसे भी बड़े काम करेगा
क्योंकि मैं पिता परमात्मा के पास जा रहा हूँ। [13]जो कुछ तुम मेरे नाम से
माँगोगे, मैं उसे पूरा करूँगा जिससे पिता परमात्मा का तेज अपने पुत्र में
प्रकट हो। [14]यदि तुम मेरे नाम में परमात्मा से कुछ भी माँगोगे तो मैं+ उसे
पूरा करूँगा।
[15]"यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मेरे आदेशों का पालन करो।+
[16-17]तब मैं पिता परमात्मा से कहूँगा और वह तुम्हें एक और सहायक
देंगे जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा। वह पवित्र आत्मा है जो तुम्हें सच्चाई
का मार्ग बताता है। इस संसार के लोग उसको स्वीकार नहीं कर
सकते, क्योंकि न तो वह उसे देखते हैं और न उसे जानते हैं। पर तुम

उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और तुम में वास
करेगा।+
18“मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूँगा, मैं तुम्हारे पास लौट कर आऊँगा।
19थोड़े समय बाद इस संसार के लोग मुझे नहीं देखेंगे, पर तुम मुझे
देखोगे। मैं जीवित हूँ इसलिए तुम भी जीवित रहोगे। 20उस दिन तुम
जानोगे कि मैं अपने पिता परमात्मा में हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुम में।
21जो मेरे आदेशों को स्वीकार करता और उनका पालन करता है, वही
मुझसे प्रेम करता है। जो मुझसे प्रेम करता है, उससे मेरे पिता परमात्मा
प्रेम करेंगे और मैं उससे प्रेम करूँगा और उसको अपना दर्शन दूँगा।”
22शिष्य यहूदा इस्करियोत नहीं परंतु दूसरे यहूदा ने पूछा, “प्रभु, यह
क्या कि आप हमें दर्शन देंगे और पुरे संसार को नहीं?”
23प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “यदि कोई मुझसे प्रेम करे, तो मेरी शिक्षा
का पालन करे और उस व्यक्ति से मेरे पिता परमात्मा प्रेम करेंगे और
हम उसके पास आएँगे और उसके साथ निवास करेंगे। 24परंतु जो मुझसे
प्रेम नहीं करता, वह मेरी शिक्षा का पालन नहीं करता। यह शिक्षा जो
तुम सुनते हो, मेरी नहीं, परंतु मेरे पिता परमात्मा की है जिन्होंने मुझे
भेजा है।
25“तुम्हारे साथ रहते हुए ही मैंने तुमसे ये बातें कह दी हैं। 26परंतु
सहायक, अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता परमात्मा मेरे नाम में भेजेंगे,
तुम्हें सब बातें सिखाएगा और सबकुछ जो मैंने तुमसे कहा है, तुमको
याद दिलाएगा।
27“मैं तुम्हें शांति का उपहार दिए जाता हूँ, और जो शांति मैं देता हूँ
वह एक ऐसा उपहार है जो दुनिया नहीं दे सकती। इसलिए डरो मत,
और अपने मन को दुखी न होने दो।
28“तुमने सुना कि मैंने तुमसे क्या कहा, ‘मैं जा रहा हूँ और फिर तुम्हारे
पास आऊँगा।’ यदि तुम मुझसे प्रेम करते तो खुशियाँ मनाते, क्योंकि
पिता परमात्मा मुझसे महान् हैं और मैं उनके पास जा रहा हूँ।
29“जो होने वाला है, उसे मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया है, ताकि
जब वह हो, तो तुम मुझपर विश्वास करो। 30अब मैं तुमसे और नहीं
बोलूँगा, क्योंकि इस संसार का शासक शैतान आ रहा है। उसका मुझ
पर कोई अधिकार नहीं। 31पर पिता परमात्मा ने मुझे जो आदेश दिया

है, मैं उसका पालन करता हूँ ताकि संसार के लोग यह जान लें कि मैं
पिता परमात्मा से प्रेम करता हूँ।
"उठो, यहाँ से चलें।"

15

जीवन कैसे फलवंत हो सकता है?

[1]गुरु येशु ने अपने शिष्यों से कहा, "मैं असली अंगूर की बेल हूँ और
मेरा पिता परमात्मा किसान हैं जो अंगूर की बेल लगाता है। [2]वह उन
फलहीन शाखाओं को, जो मुझसे जुड़ी हैं, उठाकर संभालते हैं, और
हर एक वह शाखा जो फल फलती है, छांटकर साफ करते हैं ताकि
वह और भी ज़्यादा फले। [3]जो संदेश मैंने तुमसे कहा है, उसके द्वारा
तुम शुद्ध किए जा चुके हो।
[4]"तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुममें बना रहूँगा। यदि एक शाखा
अंगूर की बेल में जुड़ी न रहे, तो अपने आप नहीं फल सकती। उसी
प्रकार तुम भी यदि मुझमें जुड़े न रहो तो फल नहीं सकते। [5]मैं अंगूर की
बेल हूँ और तुम शाखाएँ हो। जो मुझमें जुड़ा रहता है और मैं उसमें, वह
बहुत फलता है, क्योंकि मुझसे अलग रहकर तुम कुछ भी नहीं कर
सकते। [6]यदि कोई मुझमें जुड़ा नहीं रहता तो वह कटी हुई शाखा के
समान फेंक दिया जाता है और वह सूख जाता है। सूखी शाखाओं को
इकट्ठा किया जाता है, और वे आग में झोंक दी जाती हैं तथा जला दी
जाती हैं।
[7]"यदि तुम मुझमें जुड़े रहो और मेरा संदेश तुम्हारे मन में रहे, तो जो
चाहो, पिता परमात्मा से माँगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा। [8]मेरे
पिता परमात्मा का तेज इसी में है कि तुम बहुत फलो। यह दिखता
है कि तुम मेरे शिष्य हो। [9]जैसे मेरे पिता परमात्मा ने मुझसे प्रेम किया,
वैसे ही मैंने तुमसे प्रेम किया। मेरे प्रेम की छाया में बने रहो। [10]मैंने अपने
पिता परमात्मा के आदेशों को माना है और मैं उनके प्रेम की छाया में
बना रहता हूँ। यदि तुम मेरे आदेशों को मानोगे, तो मेरे प्रेम की छाया
में बने रहोगे। [11]ये बातें मैंने तुम से इसलिये कही हैं कि तुम भी मेरी
खुशी से भर जाओ। हाँ, तुम्हारी खुशी उमड़ पड़ेगी! [12]यह मेरा आदेश
है कि जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया है वैसा ही तुम भी एक-दूसरे से प्रेम

करो। [13]इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई व्यक्ति अपने मित्रों
के लिए अपनी जान दे। [14]जो आदेश मैं देता हूँ, यदि उसे तुम पालन
करो, तो तुम मेरे मित्र हो। [15]अब से मैं तुम्हें सेवक नहीं कहूँगा, क्योंकि
सेवक नहीं जानता कि उसका मालिक क्या योजना बना रहा है। परंतु
मैंने तुमको मित्र कहा है, क्योंकि जो कुछ मैंने अपने पिता परमात्मा से
सुना, वह सब तुमको बता दिया।
[16]"तुमने मुझे नहीं चुना, पर मैंने तुमको चुना और संसार में भेजा है
कि तुम भक्ति के फल पैदा करो* और इन फलों की मिठास तुम में
और दूसरों में हमेशा बनी रहे। क्योंकि मैंने तुम्हें चुना है इस कारण जो
कुछ तुम मेरे नाम से पिता परमात्मा से माँगोगे, वह तुमको देंगे। [17]मैं
तुमको यह आदेश देता हूँ कि तुम एक-दूसरे से प्रेम करो।"

भ्रष्ट संसार

[18]प्रभु येशु ने आगे कहा, "यदि इस संसार के लोग तुमसे नफरत
करते हैं, तो ध्यान रखो कि उन्होंने पहले मुझसे नफरत की। [19]यदि
तुम इस संसार के मार्ग पर चलते, तब वे तुम से प्रेम करते। पर तुम
उनके मार्ग पर नहीं चलते। मैंने तुम्हें उनमें से चुना है, इसलिए संसार के
मार्ग पर चलनेवाले तुमसे नफरत करते हैं। [20]जो मैंने तुमसे कहा है, उसे
याद रखना, 'सेवक* अपने मालिक से बड़ा नहीं होता।' यदि उन्होंने
मुझे सताया है तो तुम्हें भी सताएँगे। यदि उन्होंने मेरी बात मानी है तो
तुम्हारी भी मानेंगे।
[21]"परंतु वे तुम्हें मेरे कारण ये सब करेंगें, क्योंकि वे मेरे भेजने वाले
को नहीं जानते। [22]मैं आया और मैंने उन्हें परमात्मा के आदेश के बारे में
बताया। अगर मैंने ऐसा न किया होता, तो वे अपने पाप के दोषी नहीं
होते। लेकिन अब वे यह नहीं कह सकते, 'हमने कुछ भी गलत नहीं
किया है।'
[23]"जो मुझसे नफरत करता है वह मेरे पिता परमात्मा से भी नफरत
करता है। [24]यदि मैं उनके बीच अद्‌भुत चमत्कारी काम नहीं करता

---

* **15:16** *भक्ति के फल पैदा करो* - या, "फल," लेकिन इस सन्दर्भ में फल का अर्थ शिष्यों को संसार में भेजने के सुन्दर परिणाम से है। गुरु येशु के शिष्य जब उनके बारे में बताते हैं और दूसरों को गुरु येशु की शरण में लाते हैं जिससे उन्हें मोक्ष मिल जाता है 17:20; 20:21 * **15:20** *सेवक* - या, "गुलाम"

जो कभी किसी ने नहीं किए हैं, तो वे दोषी न होते। परंतु अब तो उन
लोगों ने जो कुछ मैंने किया देख लिया है, फिर भी मुझसे और मेरे पिता
परमात्मा से नफरत करते हैं। 25यह इसलिए हुआ कि उनके ग्रंथ में
लिखी यह बात पूरी हो, 'उन्होंने बिना कारण मुझसे नफरत की।'
26"मैं तुम्हें एक सहायक भेज रहा हूँ जो सत्य की आत्मा है। वह
पिता परमात्मा की ओर से आएगा और मेरे बारे में सब कुछ बताएगा।
27मेरे शिष्यों, तुम भी दूसरों को मेरे बारे में बताओगे, क्योंकि तुम तब से
मेरे साथ हो जब से मैंने लोगों को शिक्षा देना शुरू किया।"

16

मुक्तिदाता येशु की चेतावनी

1प्रभु येशु ने आगे कहा, "मैंने तुमसे यह सब इसलिए कहा कि जब
लोग तुम्हें सताएँ तब तुम भक्ति के मार्ग से भटक न जाओ। 2वे तुम्हें
यहूदी सत्संग भवनों से निकाल देंगे। और इतना ही नहीं, वह समय
आ रहा है जब तुम्हारे हत्या करने वाले समझेंगे कि वे ऐसा करने से
परमात्मा की सेवा कर रहे हैं। 3वे इस तरह के कार्य करेंगे, क्योंकि
वे न तो पिता परमात्मा को जानते हैं और न मुझे। 4मैंने तुमसे ये बातें
इसलिए कहीं हैं कि जब ये सब होने लगे तो तुम्हें याद आए कि मैंने
तुमको पहले ही सावधान कर दिया था।

परमस्वर्ग की ओर प्रस्थान

"मैंने तुमको पहले ये बातें नहीं बताईं, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।
5परंतु अब मैं अपने भेजने वाले के पास जा रहा हूँ और तुममें से कोई
मुझसे नहीं पूछ रहा है कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। 6यह पूछने के बजाय,
तुम्हारे मन सिर्फ इसलिए दुखी हो गया कि मैंने तुम्हें ये बातें बताई हैं।
7मैं तुम्हें सच्चाई प्रकट करता हूँ, यह तुम्हारे लिए लाभदायक है कि मैं
जा रहा हूँ, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो तुम्हारे मदद करने वाला तुम्हारे
पास नहीं आएगा। परंतु यदि मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेजूँगा।
8"मदद करने वाला आएगा और इस संसार के लोगों के पाप,
परमात्मा की आज्ञाओं का पालन और न्याय के बारे में जो सोच है उसे
गलत साबित करेगा। 9उनकी सोच पाप के बारे में गलत है, क्योंकि

वे सोचते हैं कि मुझ पर आस्था रखना जरूरी नहीं है। [10]परमात्मा की
आज्ञा का पालन करने के बारे में, वे कहते हैं कि मैं उनका पालन
नहीं करता। परंतु मदद करने वाली पवित्र आत्मा मेरे पिता परमात्मा
के पास जाने के बाद जहाँ तुम मुझे नहीं देख सकते तुम्हें यह तब भी
साबित करता रहेगा कि मैं उनका पालन करता हूँ। [11]न्याय के बारे में
वे यह सोचते हैं कि मुझे दोषी साबित किया जाएगा, परंतु मदद करने
वाली पवित्र आत्मा यह दिखागी कि इस संसार का शासक शैतान ही
वास्तव में दोषी साबित किया जाएगा।
[12]"मुझे तुमसे और बहुत कुछ कहना है, परंतु अभी तुम इनको सह
नहीं सकते। [13]जब मदद करने वाली सत्य-आत्मा आएगी, तब वह
तुम्हें सम्पूर्ण सत्य में ले जाने के लिए मार्गदर्शन करेगी। वह अपनी ओर
से कुछ न कहेगी, परंतु जो कुछ सुनेंगी, वही कहेगी और भविष्य में
होने वाली बातें तुम्हें बताएगी। [14]सत्य-आत्मा मेरा तेज प्रकट करेगी,
क्योंकि उसे मेरी ओर से जो मिला है, वह वही बताएगी। [15]सब जो
पिता परमात्मा का है, वह मेरा है। इस कारण मैंने कहा कि जो मेरा है,
पवित्र आत्मा मुझसे प्राप्त करेगी और तुमको बताएगी।"
[16]गुरु येशु ने अपने शिष्यों से कहा, "थोड़े समय बाद तुम मुझे नहीं
देखोगे। और उसके थोड़े समय बाद ही तुम मुझे फिर से देखोगे।"
[17]इस पर उनके कुछ शिष्य आपस में कहने लगे, "इसका क्या
मतलब है कि जो यह हमसे कह रहे हैं, 'थोड़े समय बाद तुम मुझे नहीं
देखोगे,' और 'उसके थोड़े समय बाद ही तुम मुझे फिर से देखोगे,' और
'मैं पिता परमात्मा के पास जा रहा हूँ'?" [18]वे कहने लगे, "यह 'थोड़े
समय बाद' क्या है जिसके बारे में यह कह रहे हैं? हम नहीं जानते कि
यह क्या बोल रहे हैं।"
[19]प्रभु येशु जानते थे कि वे उनसे कुछ पूछना चाहते हैं, इसलिए उसने
उनसे कहा, "क्या तुम आपस में इस बात पर विचार कर रहे हो कि
मैंने कहा, 'थोड़े समय बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़े समय बाद
ही तुम मुझे देखोगे?' [20]मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ, जो कुछ मेरे
साथ होगा उसके लिए तुम रोओगे और शोक करोगे, परंतु इस संसार
के लोग खुशियाँ मनाएँगे। तुम शोकित होंगे, किंतु तुम्हारा शोक खुशी
में बदल जाएगा।

21 “जब स्त्री प्रसव-पीड़ा में होती है तब उसे दर्द होता है, क्योंकि
उसके प्रसव का समय आ पहुँचा है। पर जब वह बच्चे को जन्म दे
देती है तब बच्चे के आने की खुशी में अपना दर्द भूल जाती है। 22 इसी
प्रकार तुम अब शोक में हो,+ परंतु तुम मुझे फिर से देखोगे और तुम्हारा
मन खुश होगा और तुमसे तुम्हारी खुशी कोई नहीं छीन सकेगा। 23 जब
मैं नहीं रहूँगा तो तुम मुझसे कुछ नहीं माँगोगे। परंतु मैं तुम पर सच्चाई
प्रकट करता हूँ, यदि तुम मेरे नाम में पिता परमात्मा से कुछ माँगोगे तो
वह तुम्हें देंगे। 24 अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा। माँगो, और
तुम पाओगे ताकि तुम पूरी तरह से खुश होओ।

भ्रष्ट संसार पर विजय

25 “इस समय मैंने ये सब बातें तुम्हें कहावतों का प्रयोग करके बताई।
परंतु समय आ रहा है कि मैं तुमसे ऐसे न बोलूँगा, परंतु पिता परमात्मा
के बारे में साफ़-साफ़ कहूँगा। 26 मैं यह कह रहा हूँ कि उस समय मुझे
तुम्हारी ओर से पिता परमात्मा से माँगने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी,
क्योंकि उस समय तुम मेरे नाम से सीधे पिता परमात्मा से माँगोगे।
27 पिता परमात्मा स्वयं तुमसे प्रेम करता है, क्योंकि तुमने मुझसे प्रेम
किया है और विश्वास किया है कि मैं पिता परमात्मा से आया हूँ। 28 मैं
पिता परमात्मा से संसार में आया हूँ। और अब मैं संसार को छोड़कर
पिता परमात्मा के पास जा रहा हूँ।”
29 उनके शिष्यों ने कहा, “अब आप हमें कहावतों में नहीं परंतु साफ
शब्दों में समझा रहे हैं। 30 अब हम समझ गए हैं कि आप सबकुछ जानते
हैं। आपको किसी से यह पूछने की भी ज़रूरत नहीं है कि वे क्या सोच
रहे हैं! इस कारण हम विश्वास करते हैं कि आप परमात्मा से हैं।”
31 प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “तुम्हें अब विश्वास हो रहा है! 32 पर देखो,
समय आ रहा है, और यह बहुत जल्द होगा कि तुम तितर-बितर हो
जाओगे और तुम मुझे अकेला छोड़कर अपने-अपने घर भाग जाओगे।
पर याद रखना, मैं अकेला नहीं हूँ। मेरा पिता परमात्मा मेरे साथ हैं। 33 ये
बातें मैंने तुमसे इसलिए कहीं कि तुम मुझ में शांति पाओ। इस संसार में
तुम्हें बहुत कष्ट मिलेगा, परंतु हिम्मत बाँधे रखना, क्योंकि मैंने संसार
को जीत लिया है।”

17

मुक्तिदाता येशु की प्रार्थना

[1]इन बातों को कहने के बाद, गुरु येशु ने आकाश की ओर आँखें उठाईं
और यह प्रार्थना की, “पिता परमात्मा, अब समय आ गया है। अपने पुत्र
को तेजस्वी बनाएँ, ताकि पुत्र आपका तेज प्रकट करे, [2]क्योंकि आपने
उसे सब लोगों पर अधिकार दिया है कि वह उन सबको, जिन्हें आपने
उसको दिया है, मोक्ष प्रदान करें। [3]मोक्ष यह है कि वे आप एक मात्र
सच्चे परमात्मा और मुक्तिदाता येशु के साथ जिन्हें आपने भेजा है, गहरा
सम्बन्ध रखें। [4]जो कार्य आपने मुझे करने को दिया था, उसे करके मैंने
पृथ्वी पर आपका तेज प्रकट की है। [5]हे पिता परमात्मा, संसार की रचना
से पहले मेरे आपके साथ जो तेज था, अब वही तेज मुझको फिर से दें।
[6]“मैंने आपके बारे में उन लोगों को बताया जिन्हें आपने संसार में से
मुझे दिया। वे आपके थे, आपने उन्हें मुझे दिया, और उन्होंने आपकी
शिक्षाओं का पालन किया। [7]अब वे जानते हैं कि जो कुछ आपने मुझे
दिया है, वह आपके ओर से हैं, [8]क्योंकि जो संदेश आपने मुझे दिया
था, मैंने उनको दे दिया। उन्होंने उसे स्वीकार किया है और अब वे
सचमुच जानते हैं कि मैं आप से आया हूँ और उन्होंने विश्वास किया
है कि आपने मुझे भेजा है। [9]मैं उनके लिए प्रार्थना कर रहा हूँ। संसार
के उन लोगों के लिए प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ जिनको आपने मुझे नहीं
दिया, परंतु उन के लिए प्रार्थना करता हूँ जिन्हें आपने मुझे दिया हैं।
[10]मेरा सब कुछ आपका है और आपका सब कुछ मेरा है, और उन
शिष्यों द्वारा मेरा तेज प्रकट हुआ है।
[11]“मैं अब संसार में नहीं रहूँगा, पर वे संसार में रहेंगे और मैं आपके
पास आ रहा हूँ। पवित्र पिता परमात्मा, आपके नाम की शक्ति से जो
आप ने मुझे दिया है, उन्हें सुरक्षित रख, ताकि वे एक हो जाएँ, जैसे
कि हम एक हैं। [12]जब तक मैं उनके साथ रहा, आपके उस नाम में जो
आपने मुझे दिया था, मैंने उनको सुरक्षित रखा और उनकी रक्षा की।
विनाश के पुत्र यहूदा को छोड़ उनमें से कोई नहीं भटका। यह इसलिए
हुआ ताकि परमात्मा-ग्रंथ में लिखी हुई भविष्यवाणी पूरी हो।
[13]“अब मैं आपके पास आ रहा हूँ। जब मैं इस संसार में उनके साथ
था तो मैंने उन्हें बहुत सी बातें बताईं ताकि वे उनके जीवन में मेरी

खुशी का अनुभव करें। 14मैंने उन्हें आपका संदेश दे दिया है और संसार
उनसे नफरत करता है क्योंकि वे संसार के नहीं हैं, जैसे मैं भी नहीं हूँ।
15"मैं यह प्रार्थना नहीं करता कि आप मेरे शिष्यों को संसार से बाहर
निकाल लें, परंतु यह कि उनको शैतान से सुरक्षित रखें। 16वे संसार के
नहीं हैं, जैसे मैं भी नहीं हूँ। 17आप उन्हें सत्य से शुद्ध करें। आपके संदेश
ही सत्य हैं। 18जैसे आपने मुझे संसार में भेजा उसी प्रकार मैंने उन्हें
संसार में भेजा है। 19उनके लिए मैं स्वयं को समर्पित करता हूँ ताकि वे
भी सम्पूर्ण रूप से समर्पित हो जाएँ।
20"मैं केवल उनके लिए ही नहीं, परंतु उन सबके लिए प्रार्थना
करता हूँ जो इन शिष्यों के संदेश द्वारा मुझ में आस्था रखेंगे। 21हे पिता
परमात्मा, मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे सब एक हो जाएँ जैसे मैं आप में
हूँ और आप मुझमें। उसी प्रकार वे हममें हों+ जिससे संसार के लोग
विश्वास करें कि आपने मुझे भेजा है।
22"जो तेज आपने मुझे दिया है, वह मैंने उन्हें दे दिया है कि जैसे हम
एक हैं, वे भी एक हों। 23मैं उनमें और आप मुझमें जिससे वे पूरी एकता
को प्राप्त करें, तब संसार के सब लोग जानेंगे कि आपने मुझे भेजा
है और जैसे आपने मुझसे प्रेम किया है, वैसे ही आपने उनसे भी प्रेम
किया है।
24"हे पिता परमात्मा, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें आपने मुझे दिया है, वे
भी मेरे साथ हों जहाँ मैं हूँ। तब वे मेरे तेज को देख सकें जो आपने मुझे
दिया है क्योंकि आपने संसार की रचना से पहले ही मुझसे प्रेम किया
है।
25"हे इंसाफ करने वाले पिता परमात्मा, संसार के लोग आपको नहीं
जानते, किंतु मैं जानता हूँ और ये शिष्य भी जानते हैं कि आपने ही मुझे
भेजा है। 26मैंने आपके बारे में इन्हें बताया है और बताता रहूँगा कि जो
प्रेम आपने मुझे दिया है वही उनमें हो और मैं उनमें होऊँ।"

18

प्रभु येशु की गिरफ्तारी

1ये बातें कहने के बाद गुरु येशु अपने शिष्यों के साथ किद्रोन घाटी के
पार गए, वहाँ वे एक जैतून के बगीचे में गए। 2गुरु येशु से विश्वासघात

करनेवाला यहूदा उस स्थान को जानता था, क्योंकि अक्सर अपने
शिष्यों के साथ गुरु येशु वहाँ जाते थे। 3प्रधान पुरोहितों और फरीसियों
ने यहूदा को उसके साथ जाने के लिए रोमन सैनिकों और मंदिर रक्षकों
का एक समूह दिए थे। अब वे जलती हुई मशालों, लालटेनों और
हथियारों के साथ जैतून के बगीचे में पहुँचे।
4प्रभु येशु जानते थे कि उनके साथ कौन-सी घटना घटने वाली है।
वह उनके पास गए और पूछे, "आप लोग किसे ढूँढ़ रहे हैं?"
5उन्होंने उत्तर दिया, "नासरत निवासी येशु को।"
गुरु येशु ने उनसे कहा, "वह मैं हूँ।" उनसे विश्वासघात करनेवाला
यहूदा वहाँ साथ खड़ा था। 6ज्योंही गुरु येशु ने कहा, "वह मैं हूँ" वे
लोग बिना किसी के छुए पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े।
7प्रभु येशु ने फिर पूछा, "आप लोग किसे ढूँढ़ रहे हैं?"
वे फिर बोले, "नासरत निवासी येशु को।"
8प्रभु येशु ने उत्तर दिया, "मैं आपसे कह चुका कि वह मैं ही हूँ। यदि
आप मुझे ही ढूंढ़ रहे हैं, तो इन बाकी लोगों को जाने दीजिए।" 9प्रभु
येशु ने इस तरह इसलिए कहा ताकि उनके ही द्वारा कही गई बातें पूरी
हो, "आपने जिन्हें मुझे दिया है, मैंने उनमें से एक को भी नहीं खोया।"
10तब शिमोन पतरस ने अपनी तलवार खींची और महापुरोहित के
एक सेवक मलखस का दायाँ कान काट डाला। 11किंतु गुरु येशु ने
पतरस से कहा, "तलवार म्यान में रखो। क्या तुम नहीं चाहते कि मैं
वह दुख का प्याला पिऊँ, जो पिता परमात्मा ने मुझे दिया है?"
12तब सैनिकों के दल, उनके सेनानायक और मंदिर के सुरक्षा कर्मियों
ने प्रभु येशु को गिरफ्तार कर बाँध लिया। 13वे उन्हें पहले महापुरोहित
काइफस के ससुर हनास के पास ले गए। 14काइफस ने ही यहूदी
धर्मगुरुओं को सलाह दी थी कि राष्ट्र के हित के लिए एक व्यक्ति का
मरना ज़रूरी और बेहतर है।

एक शिष्य अपने गुरु को बड़ी मुसीबत के समय में अकेला छोड़ना

15शिमोन पतरस तथा एक और शिष्य गुरु येशु के पीछे-पीछे गए।
यह दूसरा शिष्य महापुरोहित के जान-पहचान का था। इसलिए वह गुरु
येशु के साथ महापुरोहित के आँगन में चला गया, 16परंतु पतरस दरवाज़े

के बाहर ही खड़ा रहा। तब वह शिष्य जो महापुरोहित से परिचित
था, बाहर आया और दरवाजे पर खड़ी सेविका से कहकर पतरस को
अंदर ले गया। [17]सेविका ने पतरस से पूछा, "कहीं तुम भी उस मनुष्य
के शिष्य तो नहीं हो?"
उसने उत्तर दिया, "नहीं, मैं नहीं हूँ।"
[18]ठंड के कारण महापुरोहित के सेवकों और मंदिर के सुरक्षा कर्मियों
ने कोयले की आग जला रखी थी और वे खड़े-खड़े आग ताप रहे थे।
पतरस भी उनके साथ खड़े हो कर आग तापने लगा।

महापुरोहित द्वारा पूछताछ

[19]अन्दर, महापुरोहित ने गुरु येशु से उनके शिष्यों और उनकी
शिक्षाओं के बारे में पूछताछ की। [20]गुरु येशु ने उत्तर दिया, "हर कोई
जानता है कि मैं क्या शिक्षा देता हूँ। मैंने हमेशा यहूदी सत्संग भवनों
और मंदिर के आंगनों में जहाँ सब लोग इकट्ठा होते हैं, शिक्षा दी है
और गुप्त रूप से कुछ नहीं कहा। [21]तो आप मुझसे क्यों पूछताछ करते
हैं? उनसे पूछिए जिन्होनें मेरे शिक्षा को सुना है कि मैंने उनसे क्या कहा
है। वे जानते हैं कि मैंने उनसे क्या बातें की हैं।"
[22]गुरु येशु के यह कहने पर एक सुरक्षा कर्मी ने जो पास खड़ा था,
उनको थप्पड़ मारा और कहा, "तू एक महापुरोहित को इस प्रकार
उत्तर देता है?"
[23]गुरु येशु ने उत्तर दिया, "यदि मैंने कुछ गलत कहा है तो साबित
करो, परंतु यदि ठीक कहा है तो फिर मुझे क्यों मारते हो?"
[24]तब हनास ने गुरु येशु को, जो अभी भी बँधे हुए थे, महापुरोहित
काइफस के पास भेज दिया।
[25]उसी दौरान, जब शिमोन पतरस आँगन में खड़ा हुआ आग ताप रहा
था, लोगों ने उससे पूछा, "कहीं तुम भी तो उसके शिष्यों में से नहीं हो?"
पतरस ने मना करते हुए कहा, "मैं नहीं हूँ।"
[26]महापुरोहित के सेवकों में से एक ने, जो उस व्यक्ति का रिश्तेदार
था जिसका पतरस ने कान काट दिया था, उससे पूछा, "क्या मैंने तुम्हें
उसके साथ बगीचे में नहीं देखा था?" [27]पतरस ने फिर मना किया और
तुरंत मुरगे ने बाँग दी।

राज्यपाल पिलातुस के सामने गुरु येशु

[28]तब सुबह-सुबह गुरु येशु को काइफस से राज्यपाल पिलातुस
के भवन में ले गए। यहूदी धर्मगुरु स्वयं राज्यपाल भवन में नहीं गए,
इसलिए कि कहीं ऐसा न हो कि वे अशुद्ध हो जाएँ और मुक्ति-त्यौहार
का भोज न खा पाएँ। [29]राज्यपाल पिलातुस बाहर आया और उनसे
बोला, "इस मनुष्य पर तुम क्या आरोप लगाते हो?"
[30]उन्होंने उत्तर दिया, "यदि यह मनुष्य अपराधी न होता तो हम इसे
आपके हाथ न सौंपते।"
[31]पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम लोग इसे ले जाओ और अपने नियमों
के अनुसार इसका न्याय करो।"
यहूदी धर्मगुरु बोले, "किसी को मृत्यु-दंड देना हमारे अधिकार में
नहीं है।"
[32]यह इसलिए हुआ कि प्रभु येशु के द्वारा की गई भविष्यवाणी पूरी हों
कि उनकी मृत्यु कैसे होने वाली है।

सद्गुरु के जन्म लेने का कारण

[33]राज्यपाल पिलातुस अपने राजभवन में फिर गया। उसने गुरु येशु
को अंदर बुलाया और उनसे पूछा, "क्या तुम यहूदियों के राजा हो?"
[34]गुरु येशु ने कहा, "क्या आप स्वयं यह कह रहे हैं, या दूसरों ने
आपसे मेरे बारे में यह कहा है?"
[35]पिलातुस ने उत्तर दिया, "क्या मैं एक यहूदी हूँ? मैं नहीं हूँ। तुम्हारे
ही लोगों ने और प्रधान पुरोहितों ने तुम्हें मेरे हाथ में सौंपा है। क्यों?
तुमने ऐसा क्या किया है?"
[36]गुरु येशु ने उत्तर दिया, "मेरा साम्राज्य इस संसार की ओर से नहीं
है। यदि मेरा साम्राज्य इस संसार की ओर से होता, तो मेरे समर्थक मेरी
ओर से लड़ते और मैं यहूदी आधिकारियों के हाथ न आता। पर मेरा
साम्राज्य इस संसार की ओर से नहीं है।"
[37]तब पिलातुस बोला, "मतलब, तुम राजा हो!"
गुरु येशु ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं ही राजा हूँ, जैसे आप कह रहे हैं। पर मैंने
इसलिए जन्म लिया और संसार में आया हूँ ताकि सत्य को प्रकट करूँ।
जो सत्य को जानना चाहते हैं, वह सभी मेरे संदेश स्वीकार करते हैं।"

[38]पिलातुस ने गुरु येशु से पूछा, “सत्य क्या है?”

गुरु येशु को मृत्यु-दंड

यह कहकर राज्यपाल पिलातुस भवन के बाहर इकट्ठे लोगों के पास गया और उनसे बोला, “मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता। [39]परंतु तुम्हारी एक प्रथा है जिसके अनुसार मुक्ति-त्यौहार पर मैं तुम्हारे लिए एक कैदी को छोड़ता हूँ। तो क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए ‘यहूदियों के राजा’ को छोड़ दूँ?”

[40]वे चिल्लाकर बोले, “इसे नहीं, बल्कि बराबस को छोड़ो!” जबकि यह बराबस जेल में बंद एक विद्रोही था।

19

निर्दोष को दंड

[1]तब राज्यपाल पिलातुस ने गुरु येशु को कोड़े लगवाए। [2]सैनिकों ने काँटों का ताज बनाकर प्रभु येशु को पहनाया और बैंजनी शाही पौशाक भी पहनाई। [3]फिर वे उनके पास आकर उनकी हंसी उड़ाते हुए कहने लगे, “यहूदियों के राजा, आप की जय हो!” और उनको थप्पड़ मारे।

[4]पिलातुस फिर अपने राजभवन के बाहर गया और यहूदी धर्मगुरुओं से बोला, “देखो, मैं उसे बाहर ला रहा हूँ जिससे तुम जान लो कि मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता।” [5]तब गुरु येशु बैंजनी शाही पौशाक और काँटों का ताज पहने बाहर आए। पिलातुस ने कहा, “इसे देखो,”

[6]जब प्रधान पुरोहितों और मंदिर के सुरक्षा कर्मियों ने गुरु येशु को देखा तो चिल्लाकर बोले, “इसे क्रूस-दंड दो! इसे क्रूस-दंड दो!”

पिलातुस ने उनसे कहा, “तुम स्वयं इसे ले जाओ और क्रूस पर मृत्यु-दंड दे दो, क्योंकि मैं इसमें कोई दोष नहीं पाता।”

[7]यहूदी धर्मगुरुओं ने उत्तर दिया, “हमारे नियमों के अनुसार इसे मृत्यु-दंड मिलना चाहिए, क्योंकि यह अपने को परमात्मा का पुत्र कहता है।”

[8]जब पिलातुस ने यह बात सुनी तो वह और भी डर गया। [9]उसने फिर राजभवन में जाकर प्रभु येशु से पूछा, “तुम कहाँ से आए हो?”

परंतु प्रभु येशु ने कुछ उत्तर न दिया। [10]तब पिलातुस ने कहा, “तुम मुझे जवाब क्यों नहीं दे रहे हो? क्या तुम नहीं जानते कि मुझे तुमको छोड़ देने का और क्रूस पर मृत्यु-दंड देने का भी अधिकार है?”

[11]तब प्रभु येशु ने कहा, “यदि आपको परमात्मा ने अधिकार न दिया
होता तो आप मेरा कुछ नहीं कर सकते थे। इस कारण जिस मनुष्य ने*
मुझे आपके हाथ सौंपा है उसने आप से भी अधिक पाप किया है।”
[12]इस पर पिलातुस उनको छोड़ देने की और भी कोशिश करने लगा,
पर यहूदी धर्मगुरुओं ने चिल्लाकर कहा, “यदि आपने इसको छोड़ा तो
आप रोम के सम्राट के प्रति वफादार नहीं। जो अपने को राजा बताता है
वह सम्राट का विरोध करता है।”
[13]पिलातुस ये सब बातें सुनकर प्रभु येशु को फिर बाहर लाया और
पिलातुस न्याय आसन पर बैठ गया, जिसे “पत्थर का चबूतरा”
(इब्रानी भाषा में, “गब्बाथा”) कहा जाता है। [14]यह मुक्ति-त्यौहार की
तैयारी का दिन था और लगभग दोपहर के बारह बजे थे। पिलातुस ने
प्रभु येशु को यहूदियों के सामने लाकर कहा, “देखो, तुम्हारा राजा।”
[15]वे चिल्लाकर बोले, “इसे ले जाओ! ले जाओ! इसे क्रूस पर मृत्यु-दंड
दो!”
पिलातुस ने उनसे कहा, “क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर मृत्यु-दंड
दूँ?”
महापुरोहितों ने उत्तर दिया, “रोम सम्राट के अलावा हमारा कोई राजा
नहीं!”
[16]तब पिलातुस ने गुरु येशु को क्रूस पर मृत्यु दंड देने के लिए सैनिकों
के हाथों में सौंप दिया।

प्रभु येशु की मृत्यु

[17]प्रभु येशु लकड़ी के क्रूस के ऊपरी भाग को अकेले ही उठाकर उस
स्थान को गए जो “कपाल-स्थल” कहलाता है, और इब्रानी भाषा में,
“गोलगोथा।” [18]वहाँ उन्होंने दो अलग-अलग क्रूस पर लटके व्यक्तियों के
बीच गुरु येशु को कीलों से थोक दिया। [19]पिलातुस ने एक दोष-सूचना क्रूस
पर लगवा दिया जिसपर लिखा हुआ था, “नासरत निवासी येशु, यहूदियों
का राजा।” [20]अनेक यहूदियों ने इस दोष-सूचना को पढ़ा, क्योंकि वह

---

* **19:11** *जिस मनुष्य ने* - यह उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो अंततः प्रभु येशु को पिलातुस के पास पहुँचाने के लिए जिम्मेदार था, और वह यहूदी महापुरोहित, काइफस था।

स्थान जहाँ गुरु येशु को क्रूस पर मृत्यु-दंड दिया जाना था, शहर के पास ही
था और सूचनापत्र हिब्रू, लातीनी और ग्रीक भाषाओं में लिखा था।
21इस पर यहूदियों के प्रधान पुरोहितों ने पिलातुस से कहा, "'यहूदियों
का राजा' ऐसा न लिखिए, परंतु यह लिखिए कि 'इसने कहा था, "मैं
यहूदियों का राजा हूँ"।'"
22पिलातुस ने उत्तर दिया, "मैंने जो लिख दिया सो लिख दिया।"
23गुरु येशु को क्रूस पर मृत्यु-दंड देने के बाद सैनिकों ने उनके कपड़ों
को लेकर चार भाग किए, और आपस में बांट लिए। इसी प्रकार कुर्ता
भी लिया वह कुर्ता सिला हुआ नहीं था, परंतु ऊपर से नीचे तक केवल
बुना हुआ था। 24इसलिए उन्होंने आपस में कहा, "इसे फाड़ें नहीं, परंतु
चिट डालकर यह फैसला करें कि यह किसे मिलना चाहिए।" यह
इसलिए हुआ कि परमात्मा-ग्रंथ में लिखा पूरा हो,

"उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिए
और मेरे कुर्ते को पाने के लिए अपने नाम लिखकर चिट डाली।"

तो सैनिकों ने ऐसा ही किया।
25गुरु येशु के क्रूस के पास उनकी माँ, मौसी, क्लोपस की पत्नी
मरियम और मगदलवासी मरियम खड़ी थीं। 26गुरु येशु ने अपनी माँ
और उस शिष्य को, जो उनका प्रिय था, पास खड़े देखा तो माँ से बोले,
"महिला, देखिए, अब से यह आपका बीटा होगा।" 27और उस शिष्य से
बोले, "देखो, अब से यह तुम्हारी माँ होंगी।" उसी समय से वह शिष्य
गुरु येशु की माँ को अपने घर ले गया।

मुक्तिदाता की मृत्यु

28गुरु येशु यह जानते थे कि अब सब कुछ पूरा हो चुका है, इसलिए
उन्होंने परमात्मा-ग्रंथ में लिखा पूरा करने के लिए कहा, "मैं प्यासा हूँ।"
29वहाँ खट्टे अंगूर के रस से भरा हुआ एक घड़ा रखा हुआ था। सैनिकों
ने स्पंज को उस रस में भिगोया और उसे हीस्सोप पौधे की टहनी पर
रखकर उनके मुँह पर लगाया। 30जब गुरु येशु ने रस चख लिया तब
कहा, "मेरा काम पूरा हुआ।" और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।

19:24 भजन शास्त्र 22:18 **19:28** भजन शास्त्र 22:15; 69:21

31 अगले दिन आराम-दिवस और मुक्ति-त्यौहार था। यह यहूदी लोगों
के लिए एक खास दिन था, और वे नहीं चाहते थे कि उस दिन शव
क्रूस पर लटके रहें। इसलिए यहूदी धर्म-गुरुओं ने पिलातुस से उन
पुरूषों की टाँगें तुड़वाने और उनके शरीरों को क्रूस से नीचे उतारवाने
की विनती की। 32 सैनिक गए और गुरु येशु के साथ जो व्यक्ति पहले
लटकाया गया था, उसकी टाँगें तोड़ीं और फिर दूसरे की। 33 किंतु जब
उन्होंने गुरु येशु के पास आकर देखा कि वह पहले ही मर चुके हैं, तब
उन्होंने उनकी टाँगे नहीं तोड़ीं। 34 पर एक सैनिक ने उनकी पसली में
भाला मारा और तुरंत उसमें से खून और पानी बहने लगा। 35 जिसने यह
अपनी आँखों से देखा उसने कहा कि यह सच में हुआ है। जिससे तुम
भी विश्वास कर सको। 36 यह इसलिए हुआ कि परमात्मा-ग्रंथ में जो
लिखा था उसे पूरा होना था, "उसकी कोई भी हड्डी नहीं तोड़ी जाएगी।"
37 इसी तरह परमात्मा-ग्रंथ के एक अन्य भाग में लिखा है, "जिन्होनें उसे
भाले से घायल किया, उसे वे देखेंगे।"

प्रभु येशु के शव का गुफा में रखा जाना

38 इसके बाद अरिमतेया नगर के योसफ ने जो यहूदी धर्मगुरुओं के डर
के कारण गुरु येशु का गुप्त शिष्य था, पिलातुस से गुरु येशु के शव को
क्रूस पर से उतार के ले जाने की आज्ञा माँगी। पिलातुस ने आज्ञा दे दी और
योसफ गुरु येशु के शव को ले गया। 39 निकोदेमस, जो पहले रात के समय
गुरु येशु से मिलने आया था, योसफ के साथ था। निकोदेमस, लगभग
तेंतीस किलो मिश्रित गंधरस और खुशबूदार पौधे से बना तेल लेकर आया
था। 40 इन दोनों ने गुरु येशु का शव लिया और यहूदियों के अंतिम संस्कार
की प्रथा के अनुसार उस पर खुशबूदार मिश्रण लगाया और उसे कपड़े की
पट्टियों से लपेट दिया। 41 जहाँ गुरु येशु को क्रूस पर मृत्यु दंड दिया था,
उस स्थान के नज़दीक एक बगीचा था और बगीचे में शव रखने के लिए
एक नई गुफा थी जिसमें कभी कोई शव नहीं रखा गया था। 42 यहूदियों
के आराम-दिवस की तैयारी का दिन होने के कारण और शव रखने वाली
गुफा भी निकट थी, इसलिए उन्होंने गुरु येशु के शव को उसी में रख दिया।

19:36 निर्गमन 12:46; जनगणना 9:2; भजन शास्त्र 34:20 **19:37** जकरयाह 12:10

20

परमात्मा-ग्रंथ की भविष्यवाणी पूरी हुई

[1]हफ्ते के पहले दिन रविवार को सुबह-सुबह जबकि अँधेरा ही था,
मरियम मगदलवासी गुफा पर आई जहाँ शव रखा हुआ था और उसने
देखा कि गुफा के मुहँ से पत्थर हटा हुआ है। [2]यह देखकर वह दौड़ती
हुई शिमोन पतरस और उस अन्य शिष्य के पास गई जो गुरु येशु का
प्रिय था। और मरियम ने उनसे कहा, "कुछ लोग गुफा से प्रभु के शव को
उठा ले गए हैं और हम नहीं जानते कि उन्होंने प्रभुजी को कहाँ रखा है।"
[3]तब पतरस और वह अन्य शिष्य गुफा की ओर जाने के लिए घर से
निकल गए। [4]वे दोनों साथ-साथ दौड़ रहे थे, पर वह अन्य शिष्य दौड़कर
पतरस से आगे निकल गया और गुफा पर पहले पहुँच गया। [5]उसने गुफा में
झांका, तो देखा कि कपड़े* से बनी कफन की पट्टियाँ वहाँ पड़ी हुईं हैं, पर
वह गुफा के अंदर नहीं गया। [6]शिमोन पतरस उसके पीछे-पीछे पहुँचा। वह
गुफा के अंदर गया और उसने भी कपड़े की पट्टियों को पड़े हुए देखा। [7]परंतु
वह कपड़ा जो गुरु येशु के सिर पर बंधा था, पट्टियों के साथ नहीं था, परंतु
अलग वैसा ही लपेटा हुआ रखा था। [8]उस अन्य शिष्य ने, जो गुफा पर पहले
पहुँचा था, अंदर जाकर देखा और विश्वास किया। [9]क्योंकि तब तक वे
परमात्मा-ग्रथ में लिखे उस पद को नहीं समझ पाए थे जिसमें कहा गया था
कि प्रभु येशु मरकर ज़िन्दा ज़रूर होंगे। [10]तब वे शिष्य अपने घर लौट गए।

स्वर्गदूत, मरियम और प्रभु येशु

[11]परंतु मरियम शव रखने वाली गुफा के बाहर रोती हुई खड़ी रही।
और रोते हुए उसने गुफा में झाँका। [12]उसने दो स्वर्गदूतों को सफेद
कपड़े पहने और उस स्थान पर, जहाँ पहले गुरु येशु का शरीर रखा था,
एक सिर की तरफ और दूसरा पैर की तरफ बैठे देखा। [13]स्वर्गदूत बोले,
"तुम क्यों रो रही हो?"

मरियम ने उत्तर दिया, "वे मेरे प्रभु को ले गए और मैं नहीं जानती कि
उन्हें कहाँ रखा है।" [14]यह कहकर वह पीछे मुड़ी और प्रभु येशु को खड़े
हुए देखा, पर उसने उन्हें नहीं पहचाना कि वह प्रभु येशु हैं।

---

* **20:5** कपड़े - सन के कपड़े

15प्रभु येशु ने उससे पूछा, “तुम क्यों रो रही हो? तुम किसे ढूँढ़ रही
हो?”
वह प्रभु येशु को माली समझ कर बोली, “यदि आप उन्हें ले गए
हो तो मुझे बता दीजिए कि उन्हें कहाँ रखा है। मैं जाकर उनको ले
आऊँगी।”
16प्रभु येशु ने उससे कहा, “मरियम!” वह मुड़ी और इब्रानी भाषा में
बोली, “रब्बूनी!” अर्थात् “हे मेरे गुरु!”
17प्रभु येशु ने कहा, “मुझे पकड़े मत रहो, क्योंकि मैं अब तक पिता
परमात्मा के पास ऊपर नहीं गया हूँ। मेरे भाइयों के पास जाओ, और
उनसे कहो कि मैं अपने पिता परमात्मा और तुम्हारे पिता परमात्मा,
अपने परमात्मा और तुम्हारे परमात्मा के पास ऊपर जा रहा हूँ।”
18मगदलवासी मरियम ने जाकर शिष्यों से कहा, “मैंने प्रभु जी को
देखा है!” फिर उसने शिष्यों को बताया कि प्रभु येशु ने उससे क्या
कहा था।

प्रभु येशु का अपने शिष्यों से मिलना

19उसी दिन अर्थात् हफ्ते के पहले दिन शाम को जब शिष्य यहूदी
धर्मगुरुओं के डर के कारण घर के दरवाजे बंदकर अंदर थे, तब प्रभु
येशु अचानक आए और उनके बीच खड़े हो गए। उन्होंने शिष्यों से
कहा, “तुम्हे शांति मिले!” 20यह कहकर प्रभु येशु ने उन्हें अपने हाथ
और अपनी पसली दिखाई। शिष्य अपने प्रभु को देखकर खुशी से भर
गए। 21प्रभु येशु ने फिर से कहा, “तुम्हें शांति मिले! जैसे पिता परमात्मा
ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं तुम्हें भेजता हूँ।” 22यह कहकर उन्होंने उन
पर श्वास फूँका और कहा, “परमात्मा की पवित्र आत्मा प्राप्त करो!
23जिनके पाप तुम माफ करोगे वे माफ किए जाएँगे और जिनके पाप
तुम माफ नहीं करोगे, वे माफ नहीं होंगे।”

एक शिष्य की आशंका

24जब प्रभु येशु अपने राजदूतों के पास आए थे तब बारह में से एक
राजदूत थोमस, जो “जुड़वाँ” भी कहलाता था, वहाँ नहीं था। 25अन्य
शिष्यों ने उससे कहा, “हमने प्रभु जी को देखा है।”

परंतु थोमस ने कहा, “जब तक मैं उनके हाथों में कीलों के निशान
न देख लूँ, और जहाँ पर कीलें ठोके गए थे उस में अपनी उंगली न
रख लूँ, और जब तक मैं उनके पसली में जहाँ भाला मारा गया था वहाँ
अपना हाथ न रख लूँ, तब तक मैं विश्वास नहीं करूँगा।”
26 आठ दिन के बाद शिष्य फिर से उस कमरे में जमा हुए थे और
थोमस भी उनके साथ था। दरवाज़े बंद थे फिर भी प्रभु येशु अंदर आ
गए और उनके बीच खड़े होकर कहा, “तुममें शांति मिले” 27 तब प्रभु
येशु ने थोमस से कहा, “अपनी उंगली मेरे हाथों में रखो जहाँ कीलें
ठोकी गईं थी, और अपना हाथ मेरी पसली में रखो जहाँ भाला मारा
गया था। शक करना छोड़ो और विश्वास करो की मैं ज़िन्दा हूँ।”
28 थोमस बोल उठा, “हे मेरे प्रभु! हे मेरे परमात्मा!”
29 प्रभु येशु ने उससे कहा, “तुमने तो मुझे देखकर आस्था रखी है, किंतु
यह उनके लिए भला है जिन्होंने मुझे बिना देखे ही आस्था रखी हैं।”
30 प्रभु येशु ने अपने शिष्यों के सामने बहुत से चमत्कार दिखाए, परंतु
वे सब इस पुस्तक में शामिल नहीं हैं। 31 परंतु यह सब जो लिखे गए
है इसलिए की तुम विश्वास करो+ कि प्रभु येशु मुक्तिदाता और
परमात्मा-पुत्र हैं और इसी आस्था रखने के द्वारा और उनके नाम से
तुम्हें मोक्ष प्राप्त होगा।

21

समुद्र के किनारे पर शिष्यों को दर्शन

1 इसके बाद प्रभु येशु तिबिरियस झील* के किनारे पर अपने शिष्यों
को फिर दिखाई दिए। यह इस प्रकार हुआ की।
2 शिमोन पतरस, थोमस जो जुड़वाँ भी कहलाता था, नतनएल जो
गलील प्रदेश के काना नगर का निवासी था, ज़बदियाह के दो पुत्र और
अन्य दो शिष्य एक साथ थे।
3 शिमोन पतरस ने उनसे कहा, “मैं मछली पकड़ने जाता हूँ।”
वे बोले, “हम भी तुम्हारे साथ चलते हैं।” वे चल पड़े और नाव पर
चढ़े, पर वे उस रात कुछ न पकड़ सके।

---

* **21:1** *तिबिरियस झील* - यह “गलील झील” के नाम से भी जाना जाता है।

[4]सुबह हो ही रही थी और प्रभु येशु झील के किनारे पर खड़े हुए थे,
परंतु शिष्यों ने नहीं पहचाना कि वह येशु हैं। [5]प्रभु येशु ने उनसे कहा,
“बालकों, क्या कुछ मछलियाँ पकड़ी?”
उन्होंने उत्तर दिया, “नहीं।”
[6]वह बोले, “नाव की दाईं ओर जाल डालो तो मछलियाँ पाओगे।”
उन्होंने जाल डाला और जाल में इतनी मछलियाँ आ गईं कि वे जाल
को खींच न पाए।
[7]तब वह शिष्य जो प्रभु येशु का प्रिय था, पतरस से बोला, “यह तो
प्रभुजी हैं!” यह सुनते ही कि वह प्रभु येशु हैं उसने कपड़े पहने और
फिर वह झील में कूद गया क्योंकि उसने काम करते समय कपड़े को
उतार दिए थे। [8]परंतु अन्य शिष्य नाव में मछलियों से भरे जाल को
खींचते हुए किनारे पर आए, क्योंकि वे किनारे से सिर्फ लगभग सौ
मीटर दूर थे। [9]जब वे झील के किनारे पर आए तब उन्होंने देखा कि
पहले ही कोयले की आग पर मछली रखी थी और कुछ रोटियाँ भी
वहाँ थीं।
[10]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “जो मछलियाँ तुमने अभी पकड़ी हैं उनमें
से कुछ लाओ।” [11]शिमोन पतरस ने नाव पर चढ़कर एक सौ तिरपन
बड़ी-बड़ी मछलियों से भरा जाल किनारे तक खींच लाया। लेकिन
इतनी मछलियाँ होने पर भी जाल न फटा।
[12]प्रभु येशु ने कहा, “आओ, नाश्ता कर लो।” यह आभास होते हुए
भी कि वह प्रभु ही हैं, किसी शिष्य ने उनसे यह पूछने का साहस नहीं
कि “आप कौन हैं?” [13]तब प्रभु येशु ने उन्हें रोटी और मछली दी।
[14]परमात्मा द्वारा प्रभु येशु को ज़िन्दा किए जाने के बाद प्रभु येशु ने
तीसरी बार शिष्यों को दर्शन दिया था।
[15]नाश्ते के बाद प्रभु येशु ने शिमोन पतरस से कहा, “शिमोन, योहन
के पुत्र,+ क्या इन शिष्यों के मुकाबले में तुम मुझसे अधिक प्रेम करते
हो?”
वह बोला, “जी हाँ प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूँ।”
प्रभु येशु ने कहा, “तो मेरे लोगों की देखभाल करो जो भेड़ों के समान
हैं।” [16]प्रभु येशु ने दूसरी बार कहा, “शिमोन, योहन के पुत्र, क्या तुम
मुझसे प्रेम करते हो?”

उसने उत्तर दिया, “जी हाँ प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम
करता हूँ।”
प्रभु येशु बोले, “तो मेरे लोगों की देखभाल करो जो भेड़ों के समान
हैं।” 17उन्होंने तीसरी बार पूछा, “शिमोन, योहन के पुत्र, क्या तुम मुझसे
प्रेम करते हो?”
पतरस दुखी हुआ क्योंकि प्रभु येशु ने तीसरी बार पूछा कि “क्या तुम
मुझसे प्रेम करते हो?” वह बोला, “प्रभु, आप सबकुछ जानते हैं। आप
जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूँ।”
प्रभु येशु ने कहा, “तो मेरे लोगों की देखभाल करो जो भेड़ों के समान
हैं।
18“मैं तुम पर सच्चाई प्रकट करता हूँ कि जब तुम जवान थे, तो जैसा
चाहते थे वैसा कर सकते थे। तुमने अपने कपड़े पहने और जहाँ जाना
चाहते थे चले गए। परंतु जब तुम बूढ़े हो जाओगे, तो तुम अपने हाथ
फैलाओगे, और दूसरे तुम्हें कपड़े पहनाएँगे* और तुम्हें कहाँ ले जाएँगे
जहाँ तुम नहीं जाना चाहते।” 19अब प्रभु येशु ने यह बात यह स्पष्ट रूप
से बताने के लिए कही कि पतरस किस प्रकार की मृत्यु से परमात्मा
का तेज करेगा।
इतना कहकर गुरु येशु बोले, “तुम मेरे पीछे आओ।”
20पतरस ने मुड़कर उस शिष्य को पीछे आते हुए देखा जो प्रभु का
प्रिय था। यह वाही था जो भोजन करते समय प्रभु येशु के पास
बैठा हुआ था और उसने पूछा था, “प्रभु, वह कौन है जो आप से
विश्वासघात करेगा?” 21तो पतरस ने प्रभु येशु से पूछा, “हे प्रभु, उसके
बारे में क्या?”
22प्रभु येशु ने कहा, “यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ज़िन्दा रहे तो
तुम्हें इससे क्या? बस, तुम मेरे पीछे चलते रहो।” 23यह बात भक्त
भाइयों और बहनों में फैल गई कि वह शिष्य कभी नहीं मरेगा। परंतु प्रभु
येशु ने यह नहीं कहा था कि वह नही मरेगा, परंतु यह कि “यदि मैं चाहूँ
कि वह मेरे आने तक ज़िन्दा रहे तो तुम्हें इससे क्या?”

---

* **21:18** *तुम अपने हाथ फैलाओगे, और दूसरे तुम्हें कपड़े पहनाएँगे* - इन वाक्यांशों का अर्थ यह है कि पतरस को बाँध दिया जाएगा और उसके हाथों को फैलाकर क्रूस पर चढ़ा दिया जाएगा।

[24]यह वही शिष्य है जो इन सब घटनाओं का गवाह है और जिसने
इन बातों को लिखा है। और हम जानते हैं कि जो कुछ उसने लिखा है
वह सच है।
[25]और भी बहुत से काम हैं जो प्रभु येशु ने किए। उनमें से यदि हर एक
के बारे में लिखा जाता तो मैं सोचता हूँ कि जितनी पुस्तकें लिखी जातीं,
वे संसार भर में भी न समातीं!